प्रवचन
क्षायिक सम्यग्दर्शन का क्रमिक विकास
आ0 विद्यासागर जी

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवममल मणोबमं गइं पत्ते।
वोच्छामि समयपाहुड मिणमो सुदकेवली भणिदं।।

गाथा नं. 99,100 अच्छा ये भी हो गया था। '' अथ वीतराग स्वसंवदेन ज्ञान सकाशात् कर्म न प्रभवतीत्ताह'' वीतराग स्वसंवेदन ज्ञानात्मक, सकाशात्, सकाशात् यह पंचमी अर्थ में है। वीतराग स्वसंवेदन ज्ञानात्मक जो स्वरूप है जब प्राप्त होता है। उससे बंध नहीं होता, यह स्पष्टीकरण कर रहे हैं। प्रकरण यह चल रहा हैं आप लोगों को सब ज्ञात हो गया। मोह से युक्त जो आत्मा है उसकी परिणति, उपयोग की परिणति तीन भागों में अथवा तीन रूप में प्राप्त होती है– मिथ्यात्व, अविरति और अज्ञान के रूप में । यह पहली गाथा कही गई थी। और जब तक कर्म बंध होता है तब तक वीतराग स्वसंवेदन ज्ञान का स्वरूप हमें उपलब्ध नहीं होता यह प्रासंगिक गाथा का आशय है उत्थानिका के रूप में आगम में जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र के स्वरूप बताए गए है। अध्यात्म में वह उससे उलट नहीं किन्तु व्यवहार सम्यग्दर्शन निश्चय सम्यग्दर्शन और क्षायिक सम्यग्दर्शन व्यवहार सम्यग्ज्ञान निश्चय सम्यग्ज्ञान और क्षायिक सम्यग्ज्ञान व्यवहार चारित्र और निश्चय चरित्र और क्षायिक चारित्र यह परिभाषा घर की नहीं है।, ये नामावली नामोल्लेख आचार्य कुंदकुंद देव की कृति पंचास्तिकाय उसके ऊपर परखंडना रूप टीका जो लिखी गई जयसेन महाराज जी की उस तात्पर्य वृत्ति में उपलब्ध होते है। आप लोगों को चाहिए कि इन तीनों परिभाषाओं को आप देख सकते है। परिभाषा तो उन्होंने नहीं दी पर इतना अवश्य बताया । व्यवहार सम्यग्दर्शन निश्चय सम्यगदर्शन का कारण है और निश्चय सम्यग्दर्शन क्षायिक सम्यग्दर्शन का कारण * हाँ बीजवत्। इसी प्रकार व्यवहार सम्यग्ज्ञान निश्चय सम्यग्ज्ञान का कारण और निश्यच सम्यग्ज्ञान क्षायिक ज्ञान का कारण इसी प्रकार व्यवहार चारित्र निश्चय चारित्र का कारण और निश्चय चारित्र क्षायिक चारित्र का कारण। अब हम चलें, क्षायिक सम्यग्दर्शन हम किसमें लें। क्षायिक सम्यग्दर्शन को जो चतुर्थ गुणस्थान से लेकर के हम बारहवे गुणस्थान तक होता हैं, सामान्य रूप से यहाँ तक होता है। क्योंकि हमें यहीं से तो प्रारंभ करना है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है। प्रारंभ के रूप में तो चतुर्थ गुणस्थान से प्रारंभ होता है। और वह पूर्ण तो हो ही जाता हैं सब लोगों की A to Z सब लोगों की धारणा पक्की बनी हुई है। चाहे आप 13 वें में चले जाएँ 14 वे में चले जाएँ या मुक्ति अवस्था मे चले जाएँ, क्षायिक सम्यग्दर्शन जो होना था वह चतुर्थ गुणस्थान में एक बार हो गया। अब बस कुछ में कुछ नहीं होना है * ये कोई मतलब नहीं * ये रट रखा है तो इस रटी रटाई को अब हम थोड़ा सा आगे बढ़ाएँ। आपको गलत नहीं कह रहे हैं जो हुआ वह अब मिटेगा नहीं इसी का नाम क्षायिक है लेकिन क्षायिक सब एक से होते हैं ऐसा नहीं। एक बात ये भी कही थी हमने कि 12वे गुणस्थान में अवगाढ़ क्षायिकसम्यदर्शन होता है तो केवल ज्ञान जब होता है वह परमावगाढ़ होता है, ये बात भी कही थी। कई बार हमने कह दिया तो इससे फलितार्थ निकलता है कि सम्यदर्शन की। उसकी यात्रा में भी Progress उन्नति उन्नतिशील होना चाहिये। दर्शन मोहनीय का क्षय हो गया अब उसमें क्या उन्नति 1 (हओ) ये दर्शन मोहनीय के क्षय होने के कारण जो क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न हुआ, वो अब मिटेगा नहीं। इतना ही अर्थ है, किन्तु उसकी पुष्टि और होती है वह आगमिक है। उसमें अब कुछ नहीं होता ऐसी धारणा नही बनाईये। ये हमारा कहना था क्योंकि व्यवहार सम्यग्दर्शन के रूप में ही उसको भी ग्रहण किया है, अध्यात्म प्रणाली में। तेषां भरतादीन यत् क्षायिक सम्यग्दर्शन् तत् तु वस्तु वृत्तया सराग सम्यग्दर्शनम्। यत्र सराग सम्यग्दर्शनम् यर्थार्थतया तत्तु व्यवहार सम्यग्दर्शनम् तत् व्यवहार

सम्यग्दर्शनम। निश्चय सम्यग्दर्शनस्य कारणत्वात्तु निश्चय सम्यग्दर्शनम् इति कथ्यते। वहाँ व्यवहार सम्यग्दर्शन का कारण होने से हम उसको कभी कह सकते हैं किन्तु वस्तुतः वह व्यवहार सम्यग्दर्शन है सराग सम्यग्दर्शन है यह कहा है। इससे स्पष्ट होता है कि निश्चय सम्यग्दर्शन का अर्थ है ध्यानात्मक स्थिति, जो शुद्धोपयोग निर्विकल्प समाधि आदि–आदि निर्विकार स्वसंवेदन ज्ञान आदि–आदि। जहाँ पर वह एक होता है तो वहाँ पर तीनों वीतरागता के रूप में उपलब्ध होते हैं। ऐसा आगम में हजारों बार कहा गया है। हजारों बार का मतलब संख्या गिनो नहीं मतलब बहुत बार कहा गया है। तुम गिनकर के बताओ महाराज 5–6 बार तो हो गया है तो कहने में यही आता है कि तुम तो बूढ़े हो गए हो। बूढ़े तो हुए नहीं सबमें बड़े हो इसलिये कह दिया कि तुम बूढ़े हो, नहीं समझे इतना तो कम से कम समझा करो। उसी प्रकार यहाँ संख्या से मतलब नहीं मतलब ये है कि निश्चय सम्यग्दर्शन का ये कारण है अब उसको ध्यानात्मक कहा, वो ध्यानात्मक सम्यग्दर्शन केवल यहॉ ये जघन्य यहॉ पर लेगें हम। मतलब ये है कि एक प्रकार से कृतकृत्य वेदक होने वाला नीचे भी चला जाता है, नही समझे उसकों उन्होने जघन्य नही गिना, किन्तु तिर्यंच अवस्था की अपेक्षा से गिना , क्योकि * अन्तर्मुहूर्त रहता है। उसके विकास का क्रम अपने आप में अलग है। ध्यान की दशा एक प्रकार से सप्तम गुणस्थान से प्रारंभ कर लेते हैं फिर बाद में ध्यान में अप्रमत्त अवस्था में बैठ जाएँगे तो फिर अष्टम गुणस्थान से लेकर के 12वे गुणस्थान तक ध्यान की धारा रहेगी, कोई उठकर के इधर–उधर जाएगा नहीं केवल ज्ञान होने के उपरांत जा सकता है। ये उसकी धारा है। अब इस विकास क्रम में आपने निर्जरा के स्थानों के बारे में आपने तत्त्वार्थ सूत्र के जो नवमीं अध्याय के अंत में आ जाता है लगभग। उसको आप देख लेंगे तो ज्ञात हो ज्ञात हो जाएगा कि इसका विकास क्रम क्या है और एक–एक गुणस्थान को उन्होंने अन्तर्मुहूर्त निर्धारित किया। इसमें पूर्व क्षण में जो निर्जरा हुई थी उससे उत्तर क्षण में उसकी असंख्यात गुणी निर्जरा भी कायम की है। ये प्रत्येक गुणस्थान की व्यवस्था वहाँ की बताई सतण्हं पयडीणं खयादुअवरं तु खइयलद्धीदु।

उक्कस्स खइयलद्धी घाइचउक्कखारण हवे।।166।।
सप्तानां प्रकृतीनां क्षयादवरा तु क्षायिकलब्धिस्तु।
उत्कृष्टक्षायिकलब्धिर्धाति चतुष्कक्षयेण भवेत्।।166।।
संस्कृत टीकाः
''जघन्यक्षायिकलब्ध्यसंयतसम्यग्दृष्टौ उत्कृष्ट क्षायिकलब्धि परमात्मनि भवति।''

3. ''क्षपणासार'' आ. नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
(भाषावचनिका टीका – पं. टोडरमलजी कृत)
खीणे घादिचउक्के णंतचउक्कस्स होदिं उप्पत्ती।
सादि अपज्जवसिदा उक्कस्साणंत परिसंखा।।690।।
क्षीणे घातिचतुष्केऽनंतचतुष्कस्य भवति उत्त्पत्तिः।
सादिरपर्यवसिता उत्कृष्टानंतपरिसंख्या।।690।।

घातियाकर्मनिका चतुष्क का नाश होते अनंतचतुष्टय की उत्पत्ति हो है। अनंतपना कैसे संभवे है ?
सो कहिये है सादि कहिये उपजने कालविषै आदि सहित है तथापि अपर्यवसिता कहिये अवसान जो अंत ताकरि रहित है तातै अनंत कहिये। अथवा अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा इनकी उत्कृष्ट अनन्तानन्तमात्र संख्या है, तातैं भी अनन्त कहिये।।
(खंडाकार)

4. सर्वार्थसिद्धि '' आ. उमास्वामी देवकृत तत्वार्थ सूत्र पर आ. पूज्यपाद स्वामीकृत संस्कृत टीका''
'' क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।।22।।
स एषोऽवधिः षड्विकल्पः। कुतः
अनुगाम्यननुगामिवर्द्धमानहीयमानावस्थितानवस्थितभेदात्।

वर्धमानः अपरोऽवधिः अरणिनिर्मथनोत्पन्नशुष्कपत्रोपचयीमानेन्धननिचयसमिद्धपावकवत् सम्यग्दर्शनादिगुणविशुद्धिपरिणामसन्निधानाद्यत्परिणाम उत्पन्नस्ततो वर्द्धते आ असंख्येयलोकेभ्यः।। अपरोऽवधि परिछिन्नोपादानसन्तत्यग्निशिखावत्सम्यग्दर्शनादिगुणहानिसंक्लेशपरिणाम् विवृद्धियोगाद्यत्परिणामउत्पन्नस्ततो हीयते आ अंगुल्यसंख्येयभागात्।

5 उत्तर पुराण आचार्य गुणभद्रकृतय चतुःञपचा ात्तमं पर्व

अवगाढ़ सम्यकद ान, परामवगाढ़ सम्यकद ान

भुक्लध्यानोद्ध सद्ध्यात्या मोहारातिं निहत्य सः । सावगाढ़गर्योऽभाद्

विच्चतुश्कादिभास्करः

द्वितीय भुक्लाध्यानेन धतित्रियतयधतकः । जीवस्यैवापयोगाख्यो गुणः ोशश्वसम्भवात्

धतीति नाम तद्धताद्भूदधचतुश्टये । अधतिश्वपि केशाञचदेव तत्र विलोपनात्

परावगाढ़ सम्यकत्वं चर्यान्त्यां ज्ञानद ाने । दानादिपञचकं प्राप्य सयोगः सकलोगई है। कुछ एक्सेप्शन को लेकर उन्होंने जो अष्टम गुणस्थान में है वह जाकर के 11वे गुणस्थान और उत्कृष्ट दशा को प्राप्त कर लेती है लेकिन जो उत्कृष्ट दशा 11 गुणस्थान में निर्जरा की है वह एक किसी अपेक्षा से अष्टम गुणस्थान के शुरूवात से उससे भी असंख्यात गुणी निर्जरा बताई है। जैसे उपशांत कषाय वालों को एक–एक क्षण में जो निर्जरा हुई है वह, अष्टम गुणस्थान के क्षपक श्रेणी वालों को प्रथम समय में उससे असंख्यात गुणी निर्जरा है '' असंख्येय निर्जरा'' ये कहा। अष्टम गुणस्थान के द्वितीय क्षण में क्षपक श्रेणी वालों को उससे असंख्यात गुणी निर्जरा उससे असंख्यात गुणी निर्जरा अष्टम गुणस्थान में असंख्यात उपलब्ध हो जाएँगे। ये क्रम अब अष्टम गुणस्थान से नवमे गुणस्थान में ले जाईये फिर दसवें गुणस्थान के उपरांत अंतिम क्षण में जा करके मोह का अत्यंत क्षय कर देता है फिर उसके उपरांत वह क्षायिक सम्यग्दृष्टि कहाँ जाता है ? तो बारहवे गुणस्थान में सीधा पहुंच जाता है। वहॉ द्वितीय शुक्ल ध्यान अथवा प्रथम शुक्ल ध्यान प्रारंभ होता है। ये आचार्यों की मान्यता अनुसार समझ लेना । फिर वहाँ से वह कार्यक्रम पुनः से प्रारंभ (चालू) कर देता है। तीन अवशिष्ट जो घातिया कर्म है। उनको एक–एक क्षण में इस ढंग से निर्जरा करना प्रारंभ कर देता है। उसके लिए एक और विचित्र बात बताई, बारहवें गुणस्थान के प्रथम समय से निगोदिया जीवों का निष्कासन ध्यान के माध्यम से होना प्रारंभ हो जाता है। प्रथम समय में अनंत जीवों का निष्कासन हो जाता है, द्वितीय समय में उससे अनंत गुणा ज्यादा, तृतीय समय में उससे अनंत गुणा जीव राशि का निष्कासन हो रहा है, निकाल दीजिए अब। अब किराया नहीं मिलेगा आपको यहाँ पर। इस प्रकार वह असंख्यात समय का count हम करते है। एक–एक समय में अनंत–अनंत जीव राशि असंख्यात समय तक यानि अन्तर्मुहूर्त तक यह कार्यक्रम चलता है। अंत में परम औदारिक शरीर प्राप्त होता है। इस प्रकार कोई भी कार्य व्यवस्थित जो हुआ है। वह सम्यग्दर्शन के, सम्यग्ज्ञान के और सम्यग्चरित्र के विकास क्रम में ही होता है। न कि ज्यों का त्यों बनी हुई अवस्था में। अब ज्यादा ध्यान रखिये बहुत वैचित्र्य है। हम लोग कुछ पढ़ते नहीं स्वाध्याय नहीं करते और हमारे दिमाग में चालीस वर्ष पूर्व कि धुंधला जो था वह विषय कहाँ है हमें याद नहीं आ रहा था और आज जब मैंने सोचा कि वहाँ पर संभव है। त्रिलोक सार में आया है, बहुत अच्छी बात है। आप लोगों ने भी अध्ययन किया होगा, पढ़ा होगा। सब कुछ होगा यह बहुत अच्छा है। वहाँ पर उन्होंने ने जो तिर्यंच पर्याय में क्षायिक सम्यग्दर्शन यहाँ से प्राप्त करके चला जाता है अथवा यूँ कह दो कृतकृत्य होकर के वहाँ पर जायेगा। कृतकृत्य होकर के वहाँ पर चला जायेगा। वहाँ अपनी अवस्था के अनुसार क्षायिक सम्यग्दर्शन को पूर्ण कर लेगा। वहाँ कि क्षायिक सम्यग्दर्शन, सम्यग्दर्शन के आँऽऽऽ हाँ क्षायिक सम्यग्दर्शन तो है उसके अविभागी प्रतिच्छेदों कि परिगणना वहाँ से प्रारंभ करते है। वह कहाँ से कितनी है यह उनके माध्यम से बँधो और उसका उद्देश्य निदान बंध रहित कर्म निर्जरा मात्र हो ऐसा रखो।

संदर्भ ग्रन्थ प्रमाण

1. ''त्रिलोकसार'' आ. नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित

(श्रीमन्माधवचन्द्र त्रैविद्यदेवकृत संस्कृत टीका)

धम्माधम्मागुरूलघु इगिजीवागुरूलघुस्स होंति तदो।

सुहुमाणि अपुण्णणाणे अवरे अविभागपडिछेदा।।70।।

धर्माधर्मागुरूलघोरेकजीवगुरूलधोः भवन्ति ततः।

सूक्ष्मनिगोदापूर्णज्ञाने अवरे अविभागप्रतिच्छेदाः।।70।।

धम्माधम्म। ततोनन्तस्थानानि गत्वा धर्माधर्मागुरूलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदाः,

ततोनन्तस्थानानि गत्वा एकजीवागुरूलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदा भवन्ति,

ततोनन्तस्थानानि गत्वा सूक्ष्मनिगोदलब्ध्यपर्याप्तक जघन्यज्ञानाविभागप्रतिच्छेदा उत्पद्यन्ते।।70।।

अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धाछिदी।

अडसगछप्पणतुरियं तदियं बिदियादि मूलं च ।। 71।।

अवरा क्षायिकलब्धि' वर्गशलाका ततः स्वकार्धच्छिदिः।

अष्टसप्तषट्पञ्चतुरीयं तृतीयं द्वितीयादि मूलं च।।71।।

अवरा। ततोनन्तस्थानानिगत्वा तिर्यग्गत्यसंयतसम्यग्दृष्टौ जघन्य क्षायिक

सम्यक्त्वरूपलब्धेरविभागप्रतिच्छेदाः

ततोनन्तस्थानानि गत्वा वर्गकशलाकाः, ततोनन्तस्थानानि गत्वा अर्धच्छेदाः।

ततोनन्तस्थानानि गत्वा अष्टममूलं, तस्मिन्नकवारं वर्गिते सप्तममूलं,

तस्मिन्नेकवारं वर्गिते षष्ठमूलं, तस्मिन्नेकवारं वर्गिते पञ्चममूलं, तस्मिन्नेकवारं वर्गिते चतुर्थमूलं तस्मिन्नेकवारं वर्गिते तृतीयमूलं, तस्मिन्नेकवारं वर्गिते द्वितीयमूलं, तस्मिन्नेकवारं वर्गिते प्रथममूलं चोत्पद्यन्ते।।71।।

सइमादिमूलवग्गे केवलमंतं पमाणजेट्ठमिणं।

वरखाइयलद्धिणामं सगवग्गसला हवे ठाणं।।72।।

सकृदादिमूलवर्गे केवलमन्तं प्रमाणज्येष्ठमिदम्।

वरक्षायिकलब्धिनाम स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम्।।72।।

सइ। सकृदेकवारं तस्यादिमूलस्य वर्गे गृहीते केवलज्ञानस्याविभागप्रतिच्छेदाः।

एतावदेव द्विरूपवर्गधारायामन्तं, इदमेव प्रमाणज्येष्ठं, एतदेवोत्कृष्टं, क्षायिकलब्धिनाम।

अस्याः द्विरूपवर्गधारायाः स्थानं तस्य केवलज्ञानस्य वर्गशलाकाप्रमाणं भवेत्।।72।।

2. ''लब्धिसार'' आ. नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती

प्रारंभ करते है। सबसे ज्यादा सम्यग्दर्शन के क्षायिक सम्यग्दर्शन के अविभागी प्रतिच्छेद जघन्य रूप में है, तो तिर्यंच अवस्था में हैं यह कायम ध्रुव कर दिया उन्होंने यह जघन्य है। '' अपराऽऽऽ'' अब विकास क्रम चालू होता है, विकास क्रम चालू होता है तो वह सीधे जाकर के क्षायिक सम्यग्दृष्टि जिसको परम अवगाढ़ सम्यग्दर्शन बोलते है। वहाँ पर जाकर के वह स्थित होता है। उसकी संख्या के अल्प बहुत्व की तालिका इन्होंने त्रिलोक सार में बहुत अच्छे ढंग से दिया है। आप लोगो को देखना चाहिए कि इसको हम एक ही मान कर के चल रहे हैं। सम्यग्दर्शन क्षायिक ही रहेगा किन्तु अविभागी प्रतिच्छेद उसको बोलते है शक्त्यंश। शक्त्यंशों का जो विकास होता है, वह सन्निकर्ष के क्षय के साथ ही होता है। अभी क्षायिक सम्यग्दर्शन तो हुआ लेकिन क्षायिक चारित्र नहीं हुआ। जब यह मोहनीय का क्षय होना प्रारंभ हो जायेगा तो निश्चित रूप से क्षायिक सम्यग्दर्शन को पुष्टि आती चली आती है। इसको बोलते है अविभागी प्रतिच्छेदों का वृद्धि का क्रम ऐसा उनकी दृष्टि से एक प्रकार से वह वहॉ से महापुरूष इत्यादि हो सकते हैं आदि आदि। नरक से डायरेक्ट आ जाता हैं तो इस ढंग से हो सकते है। वहॉ से एक भव उसको * हॉ सुनलो वहॉ उनको एक भव देवगति होना , कृतकृत्य होकर के , वह डायरेक्ट यहॉ पर आएगा इसका अर्थ यह है कि नरकों में जो क्षायिक सम्यग्दृष्टि के अविभागी प्रतिच्छेदों की है परिगणना , वे ज्यादा उपक्रम में है विकासशील हैं प्रोग्रेसिव है सोलिड है उसमें क्वालिटी बहुत अच्छे प्रकार की है इसके लिए हवा खाना और चाहिए

फिर बाद में जाएगा वो खाएगा । अब सोच लीजिए कितने प्रकार के क्षायिक सम्यग्दर्शन के अविभागी प्रतिच्छेदों के अपेक्षा से अंनत अंनत अविभागी प्रतिच्छेदों के स्थान समाप्त होने के उपरांत वह उपक्रम आ जाता है उसकी तुलना उन्होने ये की है सूक्ष्म निगोदिया जो लब्ध्यपर्याप्तक है उसके पास जो अक्षर लब्ध्यक्षर रूप पर्याय नामा जो क्षुतज्ञान है उसके पास भी वह अविभागी प्रतिच्छेद अंनत के रूप में है। नही समझे!उनके अंनत की परिकल्पना के लिये उन्होने जीव द्रव्य रखी पुदगल द्रव्य रखा , उनके अविभागी प्रतिच्छेद और पुदगल द्रव्य के उपरांत आकाश द्रव्य , आकाश द्रव्य के बाद काल या पहले फिर आकाश , फिर धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य के अगुरूलघुगुण के अविभागी प्रतिच्छेद , एक जीव के प्रतिच्छेद फिर इसके उपरांत करते करते करते अंत में जाकर के उन्होने सूक्ष्म निगोदिया जीव लब्ध्यपर्याप्तक है उसके श्रुतज्ञान जो पर्याय नामा अक्षर ज्ञान श्रुतज्ञान उसके पास उससे भी इस जो क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यंच अवस्था में हैं। अनंत स्थान जाने के उपरांत इसके पास अविभागी प्रतिच्छेदों की परिगणना प्राप्त हो जाती है जो क्षायिक सम्यग्दर्शन के पास विद्यमान है यह अल्पबहुत्व का उपक्रम इतना मजेदार है देखने से आप लोगों की उस संख्या की परिगणना और व्यवस्था सुनते है मुझे तो ऐसा लगा वग्गिज्जमाण लोगस्स असंख्य गुणिना वग्गिज्जमाणा– वग्गिज्जमाणा। ये अलग आ उठो, प्रमाद छोड़ो जितना बनता, उतना करो, इसको बोलते हैं असंख्यात गुणी निर्जरा।

अब कौन सी स्वाध्याय प्रणाली आ गई इन सारे–सारे भावों के ऊपर वो कहते हैं इसमें कुछ भी नहीं, इसमें मात्र बंध होता है, इसको हम क्या कहें, यह उनका ऐसा ही ज्ञान का परिणमन है, हम कुछ कह नहीं सकते।

विशुद्धि जब घर जाती है, दुनिया के प्रत्ययों में चली जाती है तो अवधिज्ञान भी नीचे आ जाता है, सम्यग्दर्शन परिणाम नीचे आ जाते हैं इस कारण अवधिज्ञान भी नीचे आ जाता है। भले ही सम्यग्दर्शन(4था गुण)
बना रहे कोई बाधा नहीं लेकिन वह असंख्यात गुणी निर्जरा समाप्त इसको क्रियाकर्म भी कहा – षटखण्डागम धवला की 13वीं पुस्तक में।

अधः कर्म, प्रयोग, कर्म, ईर्यापथ आदि–आदि क्रिया। क्रिया का अर्थ क्या है ?

क्रिया का अर्थ ये ही है कि विशुद्धि पूर्वक 6 आवश्यकों का पालन करते हुए, उसमें मुख्य चार रूप से णमोकार मंत्र भी आ जाता है तो कोई बाधा नहीं।

णमोकार मंत्र भी क्रियाकर्म है और णमोकार मंत्र पढ़ते हैं तो असंख्यात गुणी निर्जरा बैठे–बैठे आप कर सकते हैं, नामोल्लेख लेते ही आपके परिणामों में उल्लास होगा, उल्लास होते ही कर्म निर्जरा प्रारंभ हो गई और इसको विकल्प का कारण बताते हैं। आजकल लोग कि णमोकार मंत्र को पढ़ने से कर्मों की निर्जरा होती नहीं, विद्यासिद्धि के लिये मंत्र विद्या होती है। ये सब गड़बड़ है, समयसार आदि में णमोकार मंत्र का अवलम्बन लेने को कहा जब प्रसंग आयेगा बता देंगे।

मंत्र और बिम्ब इन दोनों की अवधारणा करने से आत्म परिणाम में उछाल आता है और उछालने का मूल्यांकन करो तो असंख्यात गुणी निर्जरा होती है। ये तो ठीक है, शुद्धोपयोग की दशा इससे और ऊपर है लेकिन यह भी उसी रास्ते में मिलती है, इसको हेय नहीं कहा असंख्यात गुणी निर्जरा इत्यादिक होते हैं। प्रत्याहार आदि होते हैं उसी के परिणाम में आ जाते हैं। इसीलिये इधर–उधर की बात मत सुनो, संसार में रहते हुए भी ये सब बातें इकट्ठा नहीं करते, जो छोड़ना है तो छोड़ दो, जो ग्रहण करना है तो ग्रहण कर लो, हंस बनो हँसो नहीं।

द्रव्यलिंगी है पंचम गुण में आ गया और उसी समय भरण होता है तो ग्रैवेयक तक चला जाता है किन्तु यह ध्यान रखें कि कितनी भी सल्लेखना अच्छी से अच्छी कर ले श्रावक 16वे स्वर्ग से ऊपर नहीं जा सकता, दोनों मि. दृष्टि नहीं किन्तु संयम लब्धिस्थान च्युत हो गया लेकिन इसके कारण उसकी मृत्यु बिगड़ गई। ऐसा नहीं और पंचम गुणस्थान वर्ती का मरण है ऐसा नहीं, यदि ऐसा होता तो वह नवमें ग्रैवेयक क्या चला जाता।

परिणामों की विचित्रता है इसीलिये अपने अपने परिणामों को जो व्रत लिये हैंजाता है लेकिन इसके लिये भी उन्होंने परिगणना की है अब उसके उपरांत विकास क्रम बताते हैं। अब क्षायिक सम्यग्दृष्टि जो तिर्यंच अवस्था में क्षायिक सम्यग्दर्शन के अविभागी प्रतिच्छेद हैं जो अनंत के रूप में उससे भी आगे उससे पहले अनंत स्थान जाओ तो केवल ज्ञान के वर्ग शलाका के परिगणना स्थान आ जाता है। केवल ज्ञान के वर्ग शलाका, केवल ज्ञान के अविभागी प्रतिच्छेद नहीं हैं। केवल ज्ञान के अविभागी प्रतिच्छेदों को count करने के लिये वर्ग शलाका आ जाते हैं। उसके अनंत और स्थान जाने के उपरांत अर्धच्छेद जैसे मानालो 100 हैं तो 100 के आधे कितने हो गए 50। तो ये दो हो गए पचास, इसको बोलते हैं अर्धच्छेद। ये अर्धच्छेदों के क्रम जो हैं अनंत और आ जाते हैं, उससे अनंत गुणे, अनंत भाग आगे जाने के उपरांत उसका अष्टम वर्गमूल आ जाता है, अष्टम वर्गमूल को अष्टम वर्गमूल से गुणा कर दो उसकी परिगणना है। अविभागी प्रतिच्छेदों की एक जो है सप्तम स्थान आ जाता है , हॉ सप्तम वर्गमूल स्थान , फिर उस सप्तम वर्गमूल स्थान को एक बार वर्गमूल से गुणा कर दो तो षष्ठम वर्गमूल स्थान आएगा। फिर केवलज्ञान के षष्ठम वर्गमूल स्थान को एक बार और गुणित कर दो तो पंचम वर्गमूल है फिर चतुर्थ आएगा । एक–एक बार गुणित करते–करते–करते प्रथम जो वर्गमूल है वह आ जाता है। इस प्रकार और आगे जाने के उपरांत केवलज्ञान के अविभागी प्रतिच्छेद सबसे ज्यादा है। ऐसा कहा है। * हॉ लब्ध्यपर्याप्तक * तो इसका अर्थ ये है कि बड़ा अपने आप में बहुत जोरदार है ये , इसको हम अलौकिक गणित के माध्यम से ही समझ सकते है यह। अब क्षायिक सम्यग्दर्शन की परिगणना कितनी हो गई आप देख लो ये। अब देखों यह तो ये हो गया आगम में इस ढ़ग से इसकी अविभागी प्रतिच्छेदों की क्षमता का एक अवलोकन सामान्य रूप से पसीना आ जाए सुनकर के । नही समझे ! हॉ (हॅसी) पहले तो एक बार पढ़े तो सिर पर ही चला जाए

वग्गिज्जामाणा – वग्गिज्जामाणा , मुझे तो बहुत अच्छा लगता

था और वह परिकर्म में कुन्दकुन्द देव के द्वारा लिखित है ऐसा सुनने में आया था उसकों बार – बार मैं पढ़ता था उसकी भाषा भी बहुत रोचक है । धवला के अंतर्गत वह परिकर्म के रूप मे आ जाता है सुनते षट्खंडागम के सूत्रों के ऊपर परिकर्म नाम की टीका कुन्द – कुन्द देव ने की है , ऐसा सुनने में आया था उसको पढ़ते थे उस समय लगता था ये कैसे वर्ग को असंख्यात बार करते चले जॉए आप । फिर उसके उपरांत जीव से पुदगल में आएगा पुदगल से फिर इसके उपरांत जितने भी समय है उस समय में संख्या आएगी फिर इसके उपरांत धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य और एक द्रव्य के अगुरूलघु गुण के अविभागी प्रतिच्छेद आएंगे फिर इसके उपरांत उत्कृष्ट आएगें , फिर बाद में आएगा सूक्ष्म निगोदिया जीव के लब्धि स्थान, जो पर्यायनामा का जो अक्षर श्रुत ज्ञान है उसका नम्बवर आएगा उसमें जो अविभागी प्रतिच्छेद निहित है उससे अंनत भाग जाने के उपरांत सम्यग्दर्शन लेश्या आदि है उसमें विशुद्धि बढ़ गई तो वह भी बढ़ गया। जैसे समुद्र में शुक्ल पक्ष आता है, तो ऊपर बढ़ जाता है कृष्ण पक्ष आता है तो नीचे उतर आता है तो स.द. के विकास के कारण अवधिज्ञान का विकास है। स.द. का विकास कैसे होता है ये विषय चल रहा है यदि क्षायिक स.द. है उसका विकास क्या है, तो क्षयोपशम का फिर भी ठीक है, क्षायिक का क्या है, तो क्षायिक भी अन्य चारित्र आदि की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन आदि को लेकर के बैठ जाता है तो वह विकास को प्राप्त होता है।

सैद्धान्तिक उदाहरण – क्षा.स. है अब उसके लिये देश संयम लेना है, करण आवश्यक है भले ही अनिवृत्तिकरण नहीं होता मैं मानता हूँ करण के माध्यम से ज्यों ही वह अपने पुरूषार्थ के कारण देश संयम की ओर अभिमुख हो जाता है तो सम्यग्दर्शन के साथ–साथ जो विशुद्धि थी उससे भी बढ़कर देश संयम का नाम लेते ही अधःकरण और अपूर्वकरण होंगे, इन दो के माध्यम से असंख्यात गुणी कर्म की निर्जरा होती है। यह आगम का सिद्धांत का उल्लेख है, वह क्षायिक स. था क्यों नहीं करा रहा था। विशुद्धि क्यों नहीं बढ़ा रहा था – इसको बोलते हैं भाव प्रत्यय। इस भाव–प्रत्यय के कारण जो अवधिज्ञान था वह वृद्धि को प्राप्त हो गया, अवधिज्ञान की जो वृद्धि हुई है इसको बोलते हैं अविभागी प्रतिच्छेदों का नाश होने से अवधिज्ञान का विकास। इसी प्रकार अन्य

कर्मों की निर्जरा भी जब हम अपना भाव प्रत्यय बनाते हैं, संकल्प लेते हैं, प्रेरित करते हैं तो बढ़ना प्रारंभ हो जाती है, बाहर कुछ, दिखेगा नहीं लेकिन ये पंक्तियाँ बता रहीं हैं कि आपका विकास भीतर हो रहा है।पहले के लोग कोई भी व्रत पालन करते थे तो बहुत खुश हो जाते थे। आज निर्दोष व्रत का पालन हो गया। महाराज कुछ उद्यापन के लिये बताओ, उसको बहुत खुशी होती थी। उद्यापन में वह विधान करा देता है, बर्तन बाँट देता है, कुछ लोगों को यात्रा करा देता है और कहता, आप लोगों का संयोग मिला, हमें इस प्रकार का सौभाग्य मिल गया कि आप लोग खड़े हो गये यदि आप लोग नहीं होते तो सिद्ध चक्र मण्डल नहीं बनता।

तब कहा– खर्च तो आपका हो गया, बोला नहीं समय तो आप लोगों नं दिया, अनुमति दी, स्वयं खड़े हो गये और एकाशन कर लिया हमने तो संकल्प लिया था लेकिन इसके साथ उसमें आप भी खड़े हो गये इसी का परिणाम है ये।

ये सब क्या है हमें बताओ ? – ये सब अनेक व्यक्तियों के भीतर जो उत्साह नहीं था उस उत्साह की वृद्धि के लिये हो रहा है ये भीतर चलता रहता है और सम्यग्दृष्टि इसकी पहचान करता है, बाहर वालों में क्या उल्लास हो रहा है ये सम्यग्दृष्टि आंक सकता है, मान की ओर देखने वाला नहीं देख पायेगा।

संकेत से सभी तैयार हो जाते हैं कितनी प्रभावना हो जाती है इसको बोलते हैं जिन शासन की महिमा और प्रभावना।

क्षायिक सम्यग् दर्शन जो तिर्यंचों में जघन्य हुआ है उसके स्थान अनंत स्थान आ जाते है । यह हमारी इकाई है । चतुर्थ गुणस्थान में सम्यग्दर्शन हुआ तो इस रूप में हुआ । केवलज्ञानी के पास जो क्षायिक सम्यदर्शन होता हैं , उसमें अनंत बहुभाग स्थान लाघेगें तब कही जाकर के वह मिलेगा चतुर्थ गुण स्थान में सब कुछ हो रहा है यह जितने भी कथन है वह सारे के सारे आगम से विरूद्व है । अब ! हम यह कहना चाहते है कि इतने सारे – सारे स्थान परिकल्पनाओं को जो कि अल्पबहुत्व के रूप में स्वीकार किया गया उनकों तो हमने अध्ययन किया नही और जो कोई भी व्यक्ति कह देता है तो ये इधर उधर की बॉते करे रहे है , बॉते नही आप स्वाध्याय करो हा ये हो सकता है कि यह किसी के दिमाग में नही आया हो , तो बात अलग है लेकिन इन्होने अल्पबहुत्व के रूप में अविभागी प्रतिच्छेंदों का सम्यदर्शन के शक्त्यंशों के बारे में तुलना की है केवल उसी को लेकर के । और केवल ज्ञान और क्षायिक सम्यदर्शन के अविभागी प्रतिच्छेद समान हैं क्योकि एक समवाय आता हैं समवाय ! धर्म द्रव्य के प्रदेश अधर्म द्रव्य के प्रदेश और लोकाकाश के प्रदेश और एक जीव के प्रदेश ये समवाय में बराबर है। हॉ इसी प्रकार अन्यत्र भी , धवला में भी आया है। केवलज्ञान , केवल दर्शन और सम्यग्दर्शन क्षायिक सम्यग्दर्शन इनके समवाय एक होते है । नही तो चतुर्थ गुणस्थान को और केवलज्ञान को एक ही मानकर चलोगे तो समान गृहस्थाश्रम मे हो जाएगा , नरकों में हो जाएगा , तिर्यंचों में भी हो जाएगा ? ऐसा नही । अविभागी प्रतिच्छेद । मिठास तो एक ही है Quality Quantity बढ़ती चली जाती है Quality तो एक ही रहती है ऐसा कई व्यक्तियों के मुख से सुना यह गला नही उतरता ? कैसे नही उतरता ? हमने उनको कहा देखों , दूज के चॉद की चॉदनी और पूणिमा के चॉद की चॉदनी इन दोनों में बहुत अंतर है । नही – नही महाराज , इसमें कम Quantity है Quality तो एक है ऐसा नही Quantity और Quality सारे सारे जो बढ़ते चले जाते है ऊपर ऊपर । ये पक्की बात है हॉ । यद्यपि गन्ना , दो महीने का गन्ना भी मिठास को लेकर के रहता है , छुप छुपकर के बच्चे तोड़ताड़ के खा लेते है जुकाम भी हो जाता है । थोड़ा – थोड़ा सा मिठास है किंतु बारह महीने निकलने के उपरांत उस गन्ने से गुड़ बनता है , शक्कर बनता है।वह दो महीने में निकाल करके देख लो लप्सी तक नही बनेगी उसकी । हॉ । वो कुछ किसी भी रूप में नही आएगा * हॉ हॉ * ये गलत बात है * नही नही ऐसा नही क्वान्टिटी अलग है हम गन्ने का उदाहरण दे रहे है शक्कर का नही दे रहे , ध्यान रखों हमने कैसे दिया ? हमने क्वान्टिटी ऐसा नही । यह सोलह कला है जो सोलहवे दिन में ही निकलेगी * हॉ हॉ । गन्ने का उदाहरण * हम कैंसे देंगें

हम उदाहरणाभास नही होते । समान रूप से आप देखिये उसकों , तो निश्चित रूप से मिलेगा । चतुर्थ गुणस्थान में जो क्षायिक लब्धि स्थान हैं और तिर्यंचों में हैं। इसका अर्थ अनार बोलते हैं, कोई बात नहीं। तो उसमें आप देख लो फूल और फल कैसे बनता है। जो बहुत अच्छा देखने में मिल जाएगा। इस प्रकार यह सम्यग्दर्शन जो चतुर्थ गुणस्थान में क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है। इसको कहीं–कहीं पर अध्यात्मकारों ने ''बीजमूलं'' ऐंसा कहा है, इससे समझे आप। ''आनंद सागर जी'' इसको बीज कहा है, इसका अर्थ ये है उसी में से बीज में से फूल निकलेगा और फूल में से अंकुर होकर के फूल निकलेगा फिर बाद में वह फल की ओर यात्रा करेगा। अभी यह उसके पास बीज ही मात्र है इसलिये बीज अवस्था में कभी शुद्धोपयोग नहीं हो सकता ऐंसा। वो ही ज्यादा यात्रा करेगा दिगंबर बनेगा, सब बनेगा, सब होगा। इसलिये यदि आप उसको अच्छे ढंग से फल के रूप में परिवर्तित करना चाहते हो तो नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती के द्वारा लिखा हुआ यह लब्धिसार व त्रिलोकसार इन दोनों को पढ़कर के फिर उसके साथ विद्यानंद जी महोदय ने भी इसका समर्थन किया है। ध्यान रखना उसमें भी उन्होंने यही कहा है कि वह ऐसा नहीं ऐसी आपकी शंका है लेकिन वह शंका उत्तर नहीं है ध्यान रखना उसको comma लगाकर के inverted comma(इनवर्टेड कॉमा)। ये pointedite (प्वांटेडिट) जिसको बोलते हैं। ये point (पोइन्ट) है ये पोइन्ट स्वय ं दे रहा है प्रश्नकार। ये उत्तर नहीं है इसको उत्तर मानकर के चल रहे हैं उसका परिणाम ये हुआ है पूर्व पक्ष को अच्छे ढंग से समझ लेना चाहिये वह सात–आठ पृष्ट तक है, वो, एकदम नहीं हुआ था वो * हाँ एक ही बात है वो बस * हाँ।

समयसार प्रवचन

तत्वार्थ सूत्र में अवधिज्ञान भव प्रत्यय और क्षयोपशम निमित्त वाला कहा है। भव प्रत्यय देव और नारकी के होता है मनुष्य और तिर्यच्च जीव के लिये क्षयोपशम निमित्त होता है, प्रश्न उठाया कि देव और नारकी में क्षयोपशम निमित्त नहीं है क्या ? है वहाँ भी क्षयोपशम निमित्त भव प्रत्यय से हो जाता है। अवधिज्ञानवरण का, इसलिये भवः प्रत्यय ही वहाँ पर मुख्य रूप से है किन्तु यहाँ पर भव जो मनुष्य और तिर्यञ्च को लेकर प्रत्यय नहीं होगा यानि इसके कारण अवधिज्ञानावरण का क्षयोपशम नहीं होगा, किन्तु क्षयोपशम का अर्थ ये है अवधिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम होने पर जो अवधिज्ञान होता है वह 6 प्रकार का है, उसमें से एक दो के बारे में कहना चाहते हैं। एक वर्धमान एक हीयमान अवधिज्ञान हुआ तो सम्यक्दर्शन जो है वहाँ पर फिर वर्धमान और हीयमान क्यों ?

पूज्यपाद स्वामी ने विशुद्धि, संयम इत्यादि, सम्यग्दर्शन आदि में विशुद्धि बढ़ने से उसका विकास होता है सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चरित्र के विकास के कारण वह अवधिज्ञान जिस रूप में क्षयोपशम को प्राप्त था उसमें बढ़ना प्रारंभ हो जाता है। इसको बोलते हैं वर्धमान। ''वर्धते इति वर्धमान'' तो किसके द्वारा वृद्धि को प्राप्त करता है, इसके पासये हैं कि तिर्यंचों की अपेक्षा से नरकों में ज्यादा है और नारकियों की अपेक्षा से देवों में ज्यादा हैं और देवों की अपेक्षा से मनुष्यों में ज्यादा है और मनुष्यों में भी भोगभूमि की अपेक्षा से नही कर्मभूमि के मनुष्यों में । और वह ऊपर – ऊपर बढ़ता जाएगा तेरहवे गुणस्थान में जाकर के वो निकल जाएगा। अभी हमारा कहना है तेरहवे गुणस्थान के बाद में भी कुछ संभव है , जैसे संयम लब्धि स्थान दसवे गुणस्थान के उपरांत समाप्त कर दिया जाता है वैसे, क्योकि कषाय का पूर्णतः अभाव हो जाता हैं। ग्यारहवे , बारहवे , तेरहवे गुणस्थान ये यथाख्यात चरित्र कह करके चलते है , तत्त्वार्थ सूत्र में ही मिलते है * नही । एक लब्धि स्थान , ऊपर की बात हैं। जहॉ सूक्ष्म कषाय नाम का चरित्र रूक जाता हैं। उसके बाद असंख्यात लब्धि स्थान जाकर के यथाख्यात चरित्र रूकता है। यथाख्यात चरित्र का मतलब बारहवे गुणस्थानवर्ती , फिर इसके उपरांत एक लब्धि स्थान जाकर के जिन का आ जाता है इसमें भी लब्धि स्थानों की तुलना की गई हैं इसी प्रकार आगे भी कर सकते हैं। * हॉ हॉ । क्योकि निर्जरा स्थान तो उन्होने बताए पर असंख्येय गुण निर्जरा । संयोग केवली की अपेक्षा से अयोग केवली की निर्जरा ज्यादा है। * देखिए ये बहुत हैं। ये त्रिलोक सार में आप पढ़िये , तो ये गणित कहीं भी

नही मिलेगी आपको । * ये संयम लब्धि स्थान की बात नही कह रहा हू वो केवलज्ञान और क्षायिक सम्यदर्शन की अपेक्षा से वहॉ । और ये संयम लब्धि स्थान यहॉ पर भी मिल जाएगें । तत्वार्थ सूत्र की टीका में देख लो , सवार्थ सिद्वि में मिलेगें आप लोगों को क्योकि ये दो धाराऍ है ये धवला में नही मिलेगा , धवला में मिलेगा तो दसवें गुणस्थान तक ही विकास क्रम बताया फिर कषाय रहित स्थान होने के कारण कषायनुरंजित प्रवृत्तिः लेश्या उसके साथ वो घटित नही करते * दर्शन मोहनीय के उपरान्त भी आप देख लो , दर्शन मोहनीय के अभाव होने के उपरांत भी आठ अंगों का जब कथन मिलता हैं। तो वहॉ पर चरित्र मोहनीय भी घुस करके आ जाता हैं। , चरित्र मोहनीय के कारण ही घुस करके आ जाता हैं। ये निः कांक्षित अंग हैं। ? सोचो , विस्तार करों – आकांक्षा न हो । आकांक्षा यह विषयों की ओर ले जाने वाली जो कषाय की प्रणाली हैं। उसकों संयत करेंगें तब वह अंग बनेगा। पंचम गुणस्थान में भी अभी है प्रत्याख्यान । फिर उसके उपरांत संज्वलन है , ये सारी – सारी बाते उसमें आ जाएगी । अंगों के माध्यम से सम्यग्दर्शन पुष्ट होता हैं। ऐसा आगम में उल्लेख है नांगहीन मलं छेत्तुं दर्शनं जन्म सन्ततिं (रत्नकरण्ड श्रावकाचार)एक अक्षर न्यून कोई मंत्र है अथवा अधिक भी हो तो वह विष की वेदना को दूर नहीं कर सकता। उसी प्रकार अंगहीन सम्यग्यदर्शन जन्म सन्तति को नष्ट नही कर सकता । इसमें आकांक्षा चली गई । आकांक्षा किस संबंधी ? अप्रत्याख्यान संबंधी , प्रत्याख्यान संबंधी आदि आदि सब चली जाएगी। क्षायिक सम्यग्दर्शन होने के उपरांत भी यह पुष्ट होगी और विकास क्रम चलेगा , सम्यग्दर्शन भी उसके साथ पुष्ट होता चला जा आनंद का अनुभव होता है कि किस प्रकार यह जघन्य से लेकर के यात्रा 14वें गुणस्थान को पार करके सिद्ध तक सिद्धत्व तक होती है। यह हमेशा–हमेशा याद रखने योग्य है। कुन्द–कुन्द ने भी इसी प्रकार के लब्धि स्थानों का कथन किया है। क्योंकि इनके लिये लब्धि स्थानों का इनको ज्ञान नहीं था क्या ? पूरा ज्ञान था। इसलिये तो कारण–कार्य की व्यवस्था बता करके एक–एक समय में पूर्व पर्याय जो है उत्तर पर्याय विशिष्ट द्रव्य का अपादान कारण है और उसके आगे आगे वह बढ़ता ही चला जाता है, पुष्ट होता चला जाता है। चैतन्य चंद्रोदय में एक स्थान पर हमने हेतु दिया है, शुभोपयोग जो है कलिका है, शुद्धोपयोग है फूल हॉ और उसका फल जो है केवलज्ञान यह उसका फल है। फिर अशुभपयोग क्या है ? अशुभपयोग न फूल है न कलिका है लेकिन कलिका से भी पीछे वाला कुछ मोर जैसा होता है मोर जैसा होता है यदि हो रहा है तो समझ लेना वह शुभोपयोग की ओर कदम उठाई हुई कलिका का ही रूप है जो अनिवृत्ति करण परिणाम अपूर्वकरण आदिक रूप रहता है। बाकी वो अशुभोपयोग बस्स। जो अशुभोपयोग पूर्ण रहता है वह तो किसी भी प्रकार से नहीं। उसके पास तो केवल पत्ता है नहीं समझे और अब कॉटे पीटे सब कुछ है। उसके पास छाया तो मिल जाएगी लेकिन उसके द्वारा फल फूल पत्ते वगैरह कुछ नहीं मिलेंगे वह उसकी दशा है ऐंसा थोड़ा सा बताने का प्रयास किया है फूल का विकास भी होता है तो फल की ओर उसकी यात्रा होती है। फूल का भी विकास होता है ये किसान लोग इसका महत्व समझते हैं पहले सर्वप्रथम सिट्टे आने के पूर्व में, बाल आने से पूर्व में फूल आते हैं और फूल आते हैं और फूल की यदि रक्षा होती है। उन्हीं दिनों में मान लो यदि अच्छे ढंग से वर्षा हो गई तो किसान कहते हैं, भैया जब फूल ही झड़ गया तो अब काय का। घास–फूस रहेगा हमारे लिये तो धान्य आ नहीं जाएगा हॉ कभी–कभी यदि फूल झड़ने के उपरांत यदि पुनः फूल आने की संभावना रहती है तो पुनः वह पक जाए, पुनः गर्मी हो जाए, पुनः वर्षा हो जाए बहुत ही दूर की बात होती है। उसी प्रकार फूल को भी जो फल की पूर्व पर्याय मानी जाती है। फल के रूप में यदि परिणमन करता है तो वह फूल ही करता है। लेकिन यह ध्यान रखना एक दिन में फल के रूप में नहीं करता, जब वह फूल फल के रूप में आता है तो वह फूल में से एक जो है मूँगफली के बराबर फूल हो जाता है। उसके पीछे बाजू को फूल रहता है। जैसे–जैसे फल बढ़ता जाता है वैसे–वैसे फूल सूखता सा होता है, मुरझाया सा होता –होता –होता–होता और वह फल के रूप में परिणत हो जाता है समझे आप लोग दाड़िम वृक्ष में इस प्रकार का आप देख सकते हैं। उदाहरण भी तो होने चाहिये आप लोगों को। कौन से फल हम पकड़ें दाड़िम का जो फल होता है उसमें * ऐंऽऽ अनार है। दाड़िम

जानते तो हैं दाड़िम * जानते हैं, दाड़िम नहीं जानते। * चलता है खाते तो हैं उसमें क्या है ? दाड़िम तो प्रसिद्ध तो है ही। दाना, दानेदार जो होता है * दाड़िम–दाड़िम, ठीक है इसकोरहा हैं। इससे स्पष्ट है कि लब्ध्यक्षर से लेकर के उन्होने जघन्य क्षायिक सम्यग्दर्शन के सम्यग्दर्शन संस्थान – लब्धिस्थान बता दिये उससे अनंत गुणा जाकर के वह रूक जाता हैं। वहॉ से प्रारंभ होता हैं। क्षायिक सम्यग्दर्शन के विकास की यात्रा , और केवलज्ञान में जाकर के वो चला जाता हैं। तो आत्मानुशासन में जो मार्ग दर्शन आदि आदि दस प्रकार के जो दर्शन बताए है। सम्यग्दर्शन हॉ आज्ञा आदि को लेकर के । उसमें अगाढ़ , अवगाढ़ और परमागाढ़ आदि शब्द आ जाते हैं। जो स्पष्ट बता देता है कि विकास का यह क्रम हैं। धर्मस्थान में भी इस प्रकार दस प्रकार के धर्म ध्यान होते हैं। ऐसा प्रतिक्रमण पाठ में हमें मिलता हैं। आज्ञा विचय , उपाय वचिय , अपाय विचय। उपाय विचय भी एक है इसी प्रकार विराग विचय भी है , हॉ । संस्थान विचय , लोक संस्थान विचय ऐंसा इसमें भी हैं। शुचि विचय , शरीर विचय । विचय के अपेक्षा से । शरीर के बारे में भी आया शरीर के बारे में भी आप सोचियें। शरीर विचय या अशुचि विचय ऐसा भी हैं।ये क्या है ? विचय यानि विचार करों , तो इससे स्पष्ट हो जाता हैं। कि ये जो पंचास्तिकाय के माध्यम से हमने पकड़ा था वह बिल्कुल ठीक है। ये इसका कारण है , ये इसका कारण हैं। ये इसका कार्य हैं , ये इसका कार्य हैं। उन्होने बताया । * हॉ । * सुनो –सुनो । वो ऐंसा नही है आप समझो वह निश्चय सम्यग्दर्शन लो हुआ वह व्यवहार सम्यग्दर्शन के कार्य रूप में हुआ। उसमें विकास क्रम हुआ हैं। क्योकि ध्यान में लग गया वों । अभी तक तो ज्ञान श्रद्वान में था अब तो ध्यान में लग गया और ऐसा लग गया कि अंसख्यात गुणी कर्म निर्जरा उसकी बढ़ गई । बीच में कितने अल्पबहुत्व घटित किए , देख लो , सोच लो। ये करते चले जाओ। सप्तम गुणस्थान में मान लो क्षायिक सम्यग्दर्शन किसी को हो गया अब उनका उपक्रम आएगा आठ प्रकृति , सात नही । चार अप्रत्याख्यान चार प्रत्याख्यान ये आठ को एक वह उपशम कर देता हैं। अथवा क्षय कर देता हैं। एकाग्र वृत्ति आ गई उसको । ये ध्यान के माध्यम से आ गई । सम्यग्दर्शन पुष्ट हो गया , सम्यग्ज्ञान पुष्ट हो गया । ये – ये बात यहॉ पर बीतराग स्वसंवेदन ज्ञान कहा गया । अब कुछ भी हिलेगा डुलेगा नही वहॉ से तीन चार गुणस्थान तक क्रम रहेगा ये । एक – एक समय में वह पुष्ट होती चली जा रही हैं। क्योकि कर्म की निर्जरा ही बता रही हैं। कि वह तीनों रत्नत्रय पुष्ट होते चले जा रहे है। * हॉ ये वो ठीक है जिस रूप में आप कहो हम तैयार हैं उसमें कोई बाधा नही लेकिन विकास हो रहा है। हॉ ! क्योकि विकास नही होता तो निर्जरा असंख्यात गुणी , पहले की अपेक्षा से असंख्यात गुणी क्यों होती ? गुणस्थान में नही , गुणस्थान के अन्तर्गत भी प्रति समय असंख्यात गुणी निर्जरा और असंख्यात समय तक वह चला जाएगा । फिर बाद में दूसरा गुणस्थान आएगा । इस प्रकार गुणस्थान का परिर्वतन के लिए भी असंख्यात गुणी निर्जरा स्थान हो जाते हैं। और निर्जरा स्थानों में यह पुष्ट होती चली जाती हैं। इसी प्रकार समयसार में आगे जाकर संबर आदि ज्यों का त्यों रहा इसके द्वारा कर्म की निर्जरा हुई कैसे ? * हमें ये बताना आवश्यक है कर्म की निर्जरा करने के लिये कुछ न कुछ किया उसने। कुछ न कुछ किया है तो क्या वह? उन्नति तो की है उसने हॉ एडजस्ट कर लिया उसने हॉ 'अनिवृत्तिकरण परिणाम और अध्यात्म शास्त्रों का स्वाध्याय और केवली समुद्घात और जिनेन्द्र भगवान की भक्ति और * ओ अच्छा, शास्त्र स्वाध्याय कह दिया द्वादशांग का ज्ञान तो स्वाध्याय कर लिया उसने। एक और है, अनिवृत्तिकरण भी बता दिया * द्वादशांग को तो कह दिया स्वाध्याय में आ गया। केवली समुद्घात अनिवृत्तिकरण परिणाम द्वादशांग तो बता दिया न स्वाध्याय के माध्यम से द्वादशांग अध्यात्म ज्ञान जिनेन्द्र भगवान की भक्ति, जिनेन्द्र भगवान की भक्ति के द्वारा कर्म निर्जरा होती है और आज का निश्चय, जो स्वाध्याय करने वाले हैं क्या कहते हैं ये तो कर्म हुआ। अब देखो जिनेन्द्र भगवान के द्वारा, जिनेन्द्र भगवान के द्वारा लिखित। लिखित का मतलब बताया गया जो शास्त्र है उसके द्वारा तो असंख्यात गुणी निर्जरा मानते हैं लेकिन भगवान की भक्ति करते हैं तो बंध ही होता है। ये कौन–सा भूत आ गया है ? जिनेन्द्र भगवान के द्वारा बताया हुआ जो शास्त्र है उसके अध्ययन करने से तो कर्म की निर्जरा और जिनेन्द्र भगवान की

स्तुति करते हैं तो बंध। ये कैंसा है ? ये एक धारणाएँ हैं, पट्टी पढ़ाई गई है इसके द्वारा बंध है बस दान करते हैं तो उसके द्वारा बंध है भक्ति करते हैं तो बंध। फिर करें कि नहीं करें? हेय बुद्धि से करो, आहाहाऽऽऽ भगवान। ये अपनी तरफ से लगाते हैं क्योंकि बंध अपने को इष्ट नहीं। इसलिये हेय बुद्धि से कर दो तो बंध रूक जाएगा। प्रशस्त रूक जाएगा और अप्रशस्त बढ़ जाएगा * पक्की बात है हजारों व्यक्तियों के लिये यदि मार्ग का अवरोधन आप कर रहे हैं तो पक्की बात है वह कर्म की निर्जरा कभी हो ही नहीं सकती * एँऽऽऽ हेय बुद्धि से करो कह तो रहे हैं न। ये सीखो, ये ही तो बात है पुण्य के प्रति अभी ललक बहुत है तुम लोगों की इसलिये ऐंसे कह रहे हो। अब बोलो ये कहा जाता है। अच्छी बात है हम ये कहना चाहते हैं इसी प्रकार भोजन में भी हेय बुद्धि से करो, अब करो ही नहीं क्योंकि वह बंध पुण्य बंध होगा। अरे भोजन स्वयं करते हैं तो वह सम्यग्दृष्टि के तो भोग की निर्जरा है और दान देते हैं तो बंध। फिर ऐंसे करो आप ▣ इसी प्रकार हेय बुद्धि से ही मुँह में डाल लो न। एँऽऽऽ हेय बुद्धि से भक्ति करो तो हेय बुद्धि ये सारे के सारे। किंतु परं–परं भक्ति के द्वारा करो ऐंसा कहा गया है। भक्ति नहीं विशेष भक्ति। ''विधि द्रव्य दातृ पात्र विशेषात् तद् विशेषः'' ये क्या है ? सब उल्टा है तो आचार्य कहते हैं भावों के द्वारा निर्जरा होगी भावों के द्वारा ही बंध होगा ये कहा जा रहा है। थोड़ा सा आगे बढ़ते हैं उत्थानिका में ही एक घंटा हो गया हमारा।धन्य हैं वे आराध्य जो हम लोगों को इस प्रकार का रास्ता मालूम ही नहीं था। तूफान चल रहा है। चारों तरफ से धूल आ रही है। आँखें देखने के लिये सक्षम नहीं हैं उसमें भी उन्होंने light मार के रास्ता दिखाया। आज जो है हमें बहुतअधिकार में यह कहेगें। जब तक यह रत्नत्रय जघन्य परिणाम को लिए हुए है रहते हैं।तब तक ज्ञेय बंधक हो जाते हैं। और आगे जब वे उत्कृष्ट हो जाते हैं। तो फिर वे केवलज्ञान के लिए कारण होते हैं। यह बिल्कुल देखेगें आप । समये – समये कह रहे हैं। ये सारे के सारे ये बता रहे हैं। बहुत ही बढ़िया वैज्ञानिक ढ़ंग से , संक्षेप के साथ अध्यात्मक को यहॉ पर रखा गया हैं। धन्य है वो कुन्द कुन्द । हॉ और उन कुन्द कुन्द के आशय को समझने वाले टीकाकार भी धन्य हैं। धन्य हैं। और ज्ञान सागरजी महराज जी ने भी इसी को कहा कि इसी को बार – बार पढो । जितनी बार पढते हैं। उतनी बार ऐंसा लगता है कि हम अलौकिक लोक में यात्रा कर रहे हैं , ऐसा होता हैं। बिल्कुल क्या ! आज क्षायिक सम्यग्दर्शन के बारे में तुलना करना मुश्किल हो गया था क्योकि क्षायिक भाव ! और क्षायिक भाव हो तो गया लेकिन उसका विकास नही हैं। ऐंसा कहॉ लिखा है ? मुझे बताओ । षट्खंडागम के किसी भी सूत्र में नही लिखा क्षायिक भाव उन्होने कह दिया चतुर्थ गुणस्थान से लेकर के सब गुणस्थान सब में हैं। ठीक लगाओ उसमें विकास नही होता हैं। ऐसा तो नही कहा। जब अल्प बहुत्व की बात आएगी तो कहेगे । * हो नही सकता * नही अनुभव नही अभी पढ कर के आए हैं वो पहले से ही * सुनो – सुनो अनुभव नही लगाओं पहले से तो सुनो सुनो अनुभव मत लगाओं उसमें । हम केवल तो आधार लेकर ही कहते हैं। हॉ । अन्यत्र आप निराधार कुछ बोलेगे तो मैं सुनूँगा नही , सुनकर के इसको निकाल दूँगा। क्योकि ये लोग आधार दे नही पाएँगे। और हमें तो आगे आधार देकर के इनको समझाना है और समझ में आ जाए तो ठीक हैं। तो हमें कोई मतलब नही है किन्तु ये है , आधार है हमारे पास । इससे बढ़कर के कोई आधार नही हैं। और यह द्रव्य क्षेत्र काल भाव की बात है शांतिनाथ भगवान के दरबार में ये सब हो गया । * हॉ शांतिधारा का परिणाम है यह हॉ । इतना बिल्कुल । इस प्रकार से चर्चा भूदो न भविष्यति । और , किसी को भी इसमें एतराज नही होगा । कोई विरोध नही कर सकता और कोई युक्ति नही दे सकेगा। ये विकास क्रम है , जिन्होने इस धारणा को अभी तक सुनी नही और सुनते हैं। उनको लगेगा कि हमने ये क्या कहा ?और क्या लिखा ? और हमने दूसरों को समझा दिया ? इसीलिए जब बीच – बीच में अध्यात्म की टीकाओं में भी आ जाता है , ''भरतादि जो सम्यग्दृष्टि है उनका क्षायिक सम्यग्दर्शन भी व्यवहार और सराग है।'' तो इसका अर्थ यही है कि जघन्य अवस्था में बैठे हैं। , विकास करो , चरित्र के माध्यम से । कई बार हमने कहा , सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता हैं। ये बिल्कुल ठीक हैं। उसी के माध्यम से चारित्र में भी समीचीनता आती हैं। लेकिन चारित्र के माध्यम से ही उसमें पूर्ति होती चली जाती हैं। उसकी

जो है अंतिम यात्रा , जो पूर्णता में होगी , वह बिना चरित्र के संभव नही । इसलिये कुन्द – कुन्द देव ने चारित्र खलु
हैं ज्यों ही दसवे गुणस्थान का पूर्ण हो गया फिर अपने चरित्र में लब्धि स्थान जो है विकास को प्राप्त नहीं होते ये एक मत है किन्तु सर्वार्थ सिद्धि आप लोगों ने पढ़ी होगी तत्त्वार्थ सूत्र परंपरा के अनुसार दसवें गुणस्थान के अंत तक जो कषाय कुशील पहुँच गया प्रतिसेवना कुशील असंख्यात लब्धि स्थान पूर्व में छूट गया इस प्रकार सब race में चारों थे। पुलाक भी छूट गया पुलाक के बाद हाँ इसके बाद असंख्यात लब्धि स्थान जाकर के * बकुश छूट जाता है ये चारों में असंख्यात–असंख्यात–असंख्यात लब्धि स्थानों का अंतर है इन चारों में एक–एक दूसरे में, फिर इसके उपरांत असंख्यात स्थान जाकर के कषाय कुशील जहाँ पर रूक गया था उसके बाद लब्धि स्थानों का क्रम असंख्यात और हो जाता है तो यथाख्यात चारित्र में आ जाता है ऐंऽऽऽ * हाँ निग्रन्थ निग्रन्थ, निग्रन्थ में जा जाएगा। अब निग्रन्थ जो है एक प्रकार से यथाख्यात चारित्र में भी है लेकिन इसके उपरांत आचार्य कहते हैं निग्रंथ के बाद में भी जिन जो बनता है उसके लिये भी स्नातक जिन जिसको बोलते हैं स्नातक। वह जिन भी साधु है तो उसके लिये भी उन्होंने एक स्थान और बनाया है * नहीं सब मिलकर के अनंत स्थान हैं * सुनो वहाँ ये सब मिलकर के अनंत कहा है लेकिन उन्होंने यहाँ नहीं कहा है वेसै तो एक ही स्थान जाकर के वह कर लेता है लेकिन वह स्नातक होने के नाते उसके साथ अनंत लब्धि स्थान होगा, ऐंसा अर्थ निकालेंगे ये इसका अर्थ है * हाँ–हाँ वो* क्योंकि अनंत हो गए न सब। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य और अनंत ही सब कुछ है। इसलिये उसको लगाया इससे स्पष्ट हो जाता है कि इसमें तारतम्य बना हुआ रहता है। अब हमारा कहना है, सुनो इसके अलावा भी हमारा कहना है 13 वे गुणस्थान के बाद 14 वे गुणस्थान की यात्रा करने के लिये भी और लब्धि स्थानों की व्यवस्था अवश्य है, यदि नहीं है तो हम बता देते हैं। 13 वे गुणस्थान में ही समुद्धात जब करते हैं उस समय ध्वनि अपने आप निकल जाएगी, आठ समय में असंख्यात गुणी निर्जरा उन्होंने मानी है और इस क्रिया हो इसलिये स्वीकारा उन्होंने इसके बिना वह उसके योग्य बन नहीं सकता। सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती के योग्य, ध्यान के योग्य वह बन नहीं सकता। लेकिन सबके लिये अनिवार्य नहीं होता यह बात कही गई है। ये है, तो उसमें भी इन्होंने इस क्रिया के द्वारा असंख्यात गुणी निर्जरा मानी है और सर्वप्रथम दंड होता है और दण्ड में असंख्यात गुणी निर्जरा होती है। दूसरे समय में कपट होता है, इसमें भी अभी मिश्र चल रहा है। मिश्र काय योग तो इसमें भी हो जाता है। फिर इसके उपरांत तीसरे समय में प्रतर आ जाता है उसमें भी असंख्यात गुणी निर्जरा हो गई फिर इसके उपरांत लोकपूर्ण हो गया। इसमें भी असंख्यात गुणी निर्जरा हो गई पुनः back। तो वह प्रतर में आ गया पुनः कपाट में आ गया पुनः दण्ड में आ गया और पुनः स्वस्थ हो गया इस प्रकार यह असंख्यात गुणी निर्जरा का क्रम अवश्य होता है फिर जब स्वस्थ हो गया असंख्यात गुणी निर्जरा रूक गई। अब ये बताओ 13वे गुणस्थान मेंधम्मो कहा है। और दंसण मूलो धम्मों वह बात अलग कहा। ये आप समझ लीजिए ''चारित्तं खलु धम्मो '' कहा हैं। खलु का अर्थ निश्चय से चारित्र ही धर्म हैं। और सम्यग्दर्शन को वह निश्चय की ओर ले जाता है। , सराग से व्यवहार से । यह चारित्र की महिमा है। चारित्र को गौण मत करो * वो सवाल है ही नहीं । पर जब तक वो दिमाग में नही आता न * हॉ इसलिए । जो वर्तमान में वहॉ है अनंतानुबंधी के अभाव में । अब विकास हुआ होगा ऊपर के चारित्र के माध्यम से , उसके बिना नहीं । उसमें अंतिम रूप आ गया ये मानना ही गलत है , आगम विपरीत हैं हॉ * हॉ बिल्कुल पुष्टि हो गया । सन्निकर्ष जिसको बोलते हैं। सन्निकर्ष का उदाहरण देते है देखो कैसे – एक क्षायिक सम्यग्दृष्टि है देवगति की ओर जा रहा है। एक क्षायिक सम्यग्दृष्टि है नरक गति की ओर जा रहा है। दोनों के पास क्षायिक सम्यग्दर्शन हैं। मानलीजिए दोनों के पास तीर्थंकर प्रकृति का बंध भी चल रहा है। एक को पुण्य प्रशस्त प्रकृतियों में अनुभाग पड़ रहा हैं। वह , जघन्य पड़ रहा है नीचे वालों को और ऊपर वालों को उत्कृष्ट पड़ रहा हैं। , सम्यग्दर्शन दोनों के पास क्षायिक है और दोनों पास सोलह कारण भावनाओं के कारण तीर्थंकर प्रकृति का कषाऍ 12 –

12 दोनो के पास ज्यो का त्यों हैं। कोई अंतर नही है , चतुर्थ गुणस्थान है , पक्का दोनों । लेकिन एक कच्चा और एक पक्का क्यो हो रहा हैं ? बताओ। आयु कर्म के कारण । आयु कर्म के कारण , गति नाम कर्म के कारण उसको ऊपर जा रहा हैं।तो उत्कृष्ट , नीचे जा रहा तो जघन्य । इसको बोलते हैं। सन्निकर्ष स्थान * वो अप्रशस्त स्थिति जो है नीचे वाले की ज्यादा है तो ऊपर वाले की कम हैं। हॉ । ये क्यों ? ये तो सिंद्वात है ,इसको बोलते हैं। सन्निकर्ष । सन्निकर्ष अपने आप में ये कहता है। ''द्रव्य क्षेत्रादि निमित्त वशात् कर्मणः फल प्राप्ति उदयः'' और बंध भी इसी प्रकार हैं। द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा से कर्मों का जो उदय है – फल मिलना है वह फल माना है * हॉ हॉ उसके बिना तो वह अनुयोग द्वार पूर्ण ही नही होता * सन्निकर्ष का अर्थ है निष्कर्ष * वो तो एक दूसरे के साथ जोड़ करके * बिल्कुल अन्यथा नही आ सकता *अब दोनों जो हैं। गुड़वेल है , एक नीम पर चढ़ जाता हैं। और एक गन्ने के ऊपर चढ़ जाता हैं। बहुत अंतर हैं * हम चढ़ा देगें इसमें क्या बात है ? **एक गुड़वेल जो है ना गन्ने के ऊपर चढ़ रहा है और एक जो है गुड़वेल नीम के ऊपर चढ़ रहा हैं। * हॉ ये चढ़ेगा क्या बात है ? संसर्ग – इसी को बोलते हैं। सन्निकर्ष * वो हमें कहना हैं। सन्निकर्ष का अर्थ क्या हैं। * सुनो – सुनो ! सन्निकर्ष का अर्थ ये हैं , बस ये ही है उसका कडवापन कम हो जाएगा , इसका कड़वापन ज्यादा होगा । नीचे जा रहा है उसको नीम पर चढ़ रहा है , ऊपर जा रहा है , उसको गन्ने के ऊपर चढ़ रहा है। * सुनो – सुनो । निश्चय सम्यग्दर्शन का अर्थ हमने बताया निश्चय जहॉ पर है हमने लगाया वहॉ पर ध्यान , वह बस ये है ध्यान , निर्विकल्प । निर्विकल्प लेना चल रहे हैं वही जाकर के अंतिम क्षण में पूर्ण होंगे। ये कारण समयसार है अगले क्षण में पूर्ण होंगे। ये कारण समयसार है अगले क्षण में कार्य समयसार है। यह असिद्धत्व है वह सिद्धत्व है। असिद्धत्व रूप जो पर्याय अंतिम समयवर्ती, चौदहवे गुणस्थान का वह कारण समयसार है, अंतिम समय में कार्य समयसार है तेरहवे गुणस्थान वर्ती परंपरा से कार्य–कारण समयसार है क्योंकि अभी असंख्यात समय हैं तेरहवे गुणस्थान वर्ती परंपरा से कार्य–कारण समयसार है। क्योंकि अभी असंख्यात समय हैं ये यहाँ पर कहने का तात्पर्य है। इसलिये अज्ञान से कर्म बंध होता है और ज्ञान से मुक्ति होती है सिद्धों में कार्य समयसार का अंतिम जो कारण समयसार है वो अंतिम समय में है वह साक्षात् है। इस व्यवस्था को समझना ही चाहिये तो वह हो गया पुष्ट उत्कृष्ट रत्नत्रय। यथाख्यात चारित्र अभावात् इसलिये * हॉ कारण समयसार में ज्ञान चेतना नही है वह बाद में। ज्ञान चेतना जो है कार्य रूप है और ये जो है कारण के रूप में है और ध्यान के रूप में है। ध्यान साधक अवस्था है अभी साधक अवस्था है वो साध्य है। साध्य वो पहले नहीं कह सकते। उस साध्य का साधन तो ये ही है * अंतर नहीं है, इसका अभाव उसका उत्पाद। हॉ ये बताओ हमें सोमवार और मंगलवार में कितना अंतर है * बोलो न, हाथ जोड़ने से नहीं मालूम होगा, बोलो आप ये एक बार * कान क्यों पकड़ रहे हो सबको समझ में आ जाए। ये तो बहुत जल्दी बोलते हैं, स्वभाव बदलो, नहीं समझे हॉ ✡ सोमवार और मंगलवार में अंतर कितना है एक दिन का। णत्थि अंतरं, निरंतर भी नहीं है ध्यान रखना अनंतरं है। ये ही तो गड़बड़ जल्दी कर दिये न *✡हॉ ये वो णत्थि अंतरं के बाद जो है निरंतर कहेंगे आप लेकिन अनंतरं। न अंतरं इति अनंतरं। निरंतरं इति अस्य कोऽर्थः! अनंतरं न ये है। एक–एक शब्द को बहुत सोच विचार कर के करो इसलिये शब्दार्थ नयार्थ आगमार्थ देखो आप लोग बैठोगे, प्रवचन करोगे समझोगे ऐंसे शब्दों के प्रयोग नहीं करो हॉ बहुत सोच समझकर के बोलना पड़ता है और इसमें भी असंख्यात गुणी कर्म की निर्जरा होती है और आप सुन रहे हों नहीं समझे ? 1000 व्यक्ति सुन रहे हैं तो 1000 व्यक्तियों की 1 घण्टे तक जो कर्म निर्जरा हो गई तो वक्ता को कितना लाभ मिलेगा बताओ ? * हॉ * नहीं समझे छह में एक के बराबर निर्जरा, ये–ये गणित लगाओ। बोलो प्रशस्त! कितना हो गया * हॉ * तो एक घण्टे की बात है ये एक घण्टे में भी यदि दो गए दशलक्षण में आकर के तो बताओ कितनी कर्म की निर्जरा होगी। उस वेतन को देखकर के काम कर लेते हैं *ऐंऽऽऽ * सुनो अभी हम, एक बात कह रहा था लब्धि स्थानों के प्रकरण में एक मत नहीं है। जैसे कषायों के साथ ही लब्धि स्थानों का विकास होता है ऐंसा एक मत है जैंसे पुलाक

है, बकुश है, कुशील है प्रतिसेवना कुशील है और * सूक्ष्म सांपराय * हाँ निग्रन्थ है और स्नातक हैं इस ढंग से हैं, चरित्र भी इसी प्रकार के हैं अब कषाय जब तक है तब वह असंखात–असंख्यात–असंख्यात लब्धि स्थान बढ़ाते चले जातेआवश्यक है । क्षायिक सम्यग्दृष्टि निर्विकल्प हो गया , इसी में निर्विकल्प हो रहे हैं ये कैसें हो गया। * हो जाएगा हो जाएगा निर्विकल्प । चारित्र मोहनीय को जब क्षपित करेगें य उपशमित करेगें उस समय निर्विकल्प समाधि होगी आपको । कोई भी हो उसके बिना ही हो नही सकता । या तो उपशम करो चारित्र मोहनीय को या तो क्षय करों उसमें निर्विकल्पता आएगी। उसमें भी अल्प बहुत्व हमने घटा दिया। आनंद सागर जी दुलर्भ सागर जी और कौन – कौन से सागर जी विनीत सागर जी पुनीत सागर जी और संभव सागर जी वीर सागर जी सारे – सारे सागर जी जो है न । बहुत है , इसमे कैसा होगा इसमें कैसा नही होगा * सुनो हमारा कहना है वह पुष्टि के साथ लब्धि स्थान बढाता जा रहा हैं। * वीतराग चारित्र के साथ अविनाभाव रखने वाला वह निश्चय सम्यक् ज्ञान है निश्चय सम्यग्दर्शन है। * स्पर्श तो हजारों बार है। जब तक आप चारित्र को अंगीकार नही करेंगे तब तक उस क्षायिक सम्यग्दर्शन को बीतराग सम्यग्दर्शन नही कह सकेगे और जो व्यक्ति वीतराग सम्यग्दर्शन को स्वीकार नही करेगा वह सम्यग्दर्शन के विकास सोपान को कभी भी चढ़ नही सकेगा। इसलिए वीतराग सम्यग्दर्शन को लाना है। वीतराग सम्यग्दर्शन कहॉ लिखा है ? क्षायिक सम्यग्दर्शन ये पांचों भावों मे भाव आ गए और वीतराग नही लिखा। वीतराग चारित्र होगा निश्चित रूप से वहॉ पर वीतराग सम्यग् दर्शन – वीतराग सम्यग्ज्ञान होगा । जिसको निश्चय संज्ञा अध्यात्म ग्रंन्थो में मिली है और अन्तमुहूर्त आगे बढ़ो तो क्षायिक – क्षायिक – क्षायिक सम्यग्दर्शन , सम्यग्ज्ञान और सम्यग्यचारित्र । तीनों क्षायिक हो जाऍगे। इसके उपरांत भी विकास क्रम और है और उसकी भी ध्वनियॉ निकल रही हैं। पहले तो हम बता चुके है , ज्ञान चेतना सिद्धों में होती हैं। * सुनो तो केवलज्ञान का विकास नही अनुभूति का विकास होगा * सुनो – सुनो हम उसमें चेतना जोड़ रहे हैं। ज्ञान अलग वस्तु चेतना अलग वस्तु । इसके भी सारे – सारे उपक्रम चालू हो चुके है और आधार सहित मिलेगा आपको , शुद्ध माल मिलेगा। ध्यान रखो यहॉ पर mixing नही चलता। हमारा विश्वास mixing के ऊपर नही है। आप लोग आदि हो चुके हैं। * हॉ उपक्रम जो चलेगा क्योकि चौदहवे गुणस्थान के अंतिम समय में भी कार्य समयसार की अनुभूति और कारण समयसार की अनुभूति में बहुत अंतर है। कितना अंतर है तो संसार और मोक्ष में अंतर है , जमीन और आसमान का अंतर उजाला और रात का अंतर हैं। और क्या चाहते हो बताओं एक घर के बाहर हैं और एक घर में है कितना अंतर हैं बताओ ? एक सीढ़ियों के ऊपर और एक मंच पर बैठा हैं। कितना अंतर हैं। बताओ ? सीढ़ी मे जो चढ़ रहा है वह अभी बाहर है क्योकि सीढ़ियों को बाहर ही रखा जाता है प्रायः करके । घर से बाहर । छत पर बैठ गए वो घर में हैं। और कौन सा उदाहरण चाहिए बताओ ? उदाहरण एक पर्याप्त होता है क्योकि कभी – कभी उदाहरणों को , अच्छे से अच्छे उदाहरणों को सुनकर तिलमिला जाते हैं। कई रहता है न श्वासोच्छवास रहता है और न ही सूक्ष्म मनोयोग रहता है न वचन योग रहता है न सूक्ष्म श्वासोच्छवास रहता है। ये सब कम कर लेता है जिस क्रम से करना है अब केवल सूक्ष्मकाय में स्थित होकर के सब कुछ काम करता है वहाँ पर जो साता का आस्रव हो रहा है वह पूर्णवत् नहीं है। ऐसा जिस समय जैसे हाथपैर आप हिला रहे हैं वृद्ध अवस्था में मरणासन्न अवस्था में। हॉ! नमोस्तु कर लो। ⊡यूँ–यूँ करता है यूँ–यूँ करता है। हाथ हिल नहीं पा रहा महराज जी हम कर रहे हैं–कर रहे हैं, हओ! ठीक है हम भी थोड़ा बहुत स्पंदन आ रहा है उतना ही पर्याप्त है बोलो यूँ हूँ ⊡कुछ करता है ऊँ–ऊँ। उससे तो समझ में आ जाता है चल रहा है सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति नहीं समझें समझ में नहीं आ रहा सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति का अर्थ क्या है ? तो ये है। भावों मे है लेकिन action में वह नहीं आ पा रहा है लेकिन है भाव रूप। action ही ये सही इतना ही पर्याप्त है। सल्लेखना ठीक हो जाएगी। * हॉ वो बुढ़ापे में होगा अभी नहीं होगा। * वो वहाँ पर होगा। * नहीं मतलब वो * सुनलो यहाँ पर तो आप लोग त्याग नहीं कर पा रहे हैं उनका साहस तो देखो * सुनो उनकी श्रद्धा तो देखो अभी आप लोग सोचते हो एक उपवास कर

लो सोच विचार कर लेते हैं उन्होंने जीवन पर्यंत त्याग क्या है ये ? श्रद्धा बलवती है, वह अभी नहीं हो सकती एक मास तो संकल्प कर सकते हैं, एक दिन का। हाँ आजीवन नहीं कहा जा रहा। एक ही दिन में जाना है। हओ ठीक है, जब जाएँगे–तब जाएँगे। अभी भरोसा नहीं रखता मैं। क्योंकि मान लो बच गया, आप के कहने से छोड़ दूँ तो क्या पता कब होगा इसीलिये तो हम एक–एक दिन करेंगे समझे और उसने कर दिया।* हाँ * इसीलिये तो हम कह रहे हैं। ये वो उस उम्र में ही होता है। जीवन पर्यंत जो है न आप धारणा बनाएँगे उस समय देखो आप। ''सुनो आप'', सुन रहा हूँ। ''आप के शरीर ने हिलना–डुलना बंद कर दिया हाथ हिल रहे हैं, हिल रहे हैं अब हिलेंगे भी नहीं अब जीभ हिलेगी भी नहीं अभी कुछ बोल लो क्या बोल लो'' हाँ बुद्धिपूर्वक बोलो। ''त्याग क्या करते हो क्यों ?'' हाँ बोलो बोलकर के कहो। '' बुद्धिपूर्वक मन वचन काय तीनों से कृतकारित अनुमोदन से, साक्षात् भगवान हैं, गुरूजी हैं बोल।'' हाँ बोल लेता है, ठीक है। ''अब कोई विकल्प नहीं है बिल्कुल विकल्प नहीं। '' अब कुछ नहीं मिलेगा'' हाँ –हाँ नहीं मिलेगा बिल्कुल नहीं मिलेगा। ये क्या है ? * ये है ऽऽऽ उत्कृष्ट * हाँ क्षायिक–क्षायिक लब्धि जिसको बोलना चाहिये सल्लेखना संबंधी। इसीलिये इस विकास क्रम को जो व्यक्ति नहीं मानता वह कारण कार्य की व्यवस्था को नकार कर रहा है। ये हमारा कहना है ये कुन्द–कुन्द स्वयं कह रहे हैं। क्योंकि पूर्व पर्याय विशिष्ट द्रव्य उत्तर पर्याय विशिष्ट द्रव्य के उपादान कारण के रूप में स्वीकार किया गया है और वह चौदहवे गुणस्थान तक अंतिम समय तक चलेगा वहाँ पर चतुर्थ शुक्ल ध्यान होगा। इसलिये चतुर्थ शुक्ल ध्यान के द्वारा मुक्ति होती है इसका अर्थ ये है रत्नत्रय के साथलोग। * भूल से नही ये ऐसा है , उदाहरण तो ऐसें घटित हो रहे है * बिल्कुल ठीक है। हम तो अभी मार्ग में है और गहन मंजिल में है , कैसे है ? इसलिये जब तक तेरहवा चौदहवा गुणस्थान पार नही करोगे तब तक वह अध्यात्म स्थान को भी ऊपर चढ़ जाओ। हॉ अध्यात्म स्थान में ही इतना रस आ रहा है तो अध्यात्म मे कितना ? आत्मा में कितना ? इसलिए यू कहना चाहिये जीवस्थान गत , जीवस्थान – जीवत्व जिसको बोलते हैं। जीवत्व जब तक रहेगा तब तक सिद्धत्व का अनुभव नही होगा। ये है चलो अब आगे अच्छी हो गई है आधे घंटे की * हॉ ठीक ठीक वर्ग करते चले जाओ , वह गुणन क्रम से देखो। एक और उदाहरण देता हूँ। आयुर्वेद में पुट बोलते है , सुनो सब लोग सुनो बहुत अच्छा है पुट बोलते है। अब देखो कि एक दो किलो या चार किलो पीपल ले आए । पीपल समझते हो ? * वो पीपल नही , लेड़ी पीपल जिसको बोलते हैं। * ठीक –ठीक । अब उसको कूटते हैं। * हॉ इसको चौसठ प्रहर तक कूटना । इसको बोलते है चौसठ प्रहरी पीपल । पीपल बाजार से मिलता है और घर में आकर कें उसको चौसठ प्रहर तक कूटना होता है कूटने के भी क्रम अपने ढ़ग से होते है। और कूटते कूटते चार किलो है फिर इसके उपरांत दो किलो उसमें से निकाल दिया। दो किलो के ऊपर ही कूटना और प्रारंभ कर दिया कम मात्रा हो गई । कूटन की पिटाई होना प्रारंभ हो गई । पुनः उसमे से आध ा किलो निकल गया तो एक किलो रह गया , उसके ऊपर कुटाई होने लगी । इस प्रकार करते करते जितनी बार आप निकालो उतने वो पुट बढ़ते चले जा रहे है और सूक्ष्म कण होते चले जा रहे हैं। और वे जितने सूक्ष्म कण होतें है वे ही आपके विशेष कार्यकारी होते हैं। घुसकर के जो बैठा है , बुखार , उसको निकालने में वो तत्पर हो जाते है। * हॉ । पीपल को एक दो बार में फॉक ही ले लो तो , वैसे नही निकलने वाला वो। सूक्ष्म होता चला जाता हैं। इसको भावना । ये सहस्र कुटी अभ्रक , पांच सौ कुटी अभ्रक , दो सौ कुटी अभ्रक , एक हजार कुटी , पांच हजार कुटी की भी हो सकती हैं। * अभ्रक की भस्म होती है * हॉ उसके अविभागी प्रतिच्छेद । अविभागी प्रतिच्छेद नही अविभागी प्रतिच्छेद की quality बढ़ती चली जाती हैं। हॉ शक्य बढ़ते चले जा रहे हैं। ऐसे वो भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं * मत करो धारणा जबरदस्ती कराई नही जा सकती वो लंबी चौड़ी नही हैं। होता ऐंसे है दुलर्भ चीज है न ऐसे नही बिकती । उसके sample नही दिखाया जाता। मोती है माणिक है हीरा है ये sample नही देखते है , ध्यान रखो । है ही नही ऐसा कह देते है। समझे । ग्राहक आ जाता है , वो मिलेगा नही , अरे ! हम तो सुनकर के आए हैं। लेकिन उस समय सुना था जिस समय होगा इस समय

तो है ही नही वो। नही – नही , हम आपके भैया से मिलकर आए है । नही नही , उन्होने अभी – अभी तो फोन से कहा है । नही वही से उन्होने ही भेजा है। हॉ संभव है , ठीक – ठीक है वो सौदा होते – होते रूक गया सुनने में मुझे भी आया है वो तो पांच के ऊपर की बात है ये देख लो। ये सारे के सारे आज समाप्त हो गए, ''पढ़ाय दो महाराज! काय पढ़ाय दो! महाराज सूत्र जी, हॉ। भक्तामर जी, हूँ। सहस्रनाम जी, दौलतराम जी। ये क्या है बताओ ? अब छहढाला को समयसार के साथ लगाओ, कुन्द कुन्द के अध्यात्म के साथ लगाओ ये ठीक नहीं। उन्होंने आद्योपान्त कौन सी शब्दावलियों का प्रयोग किया। कहाँ–कहाँ पर किसको किस रूप में अर्थ के रूप में अवधारित किया ये सब पढ़ना चाहिये तो इसलिये लब्धिसार में एक गाथा का आपके सामने अर्थ बता दिया जो कल की पुष्टि यहाँ पर होती है चूँकि लब्धिसार कर्म सिद्धांत परक ग्रंथ है, त्रिलोकसार करणानुयोग का ग्रन्थ है। करण का अर्थ होता है गणिती, हॉ लेकिन भाव यहाँ पर भी वो ही लाया क्योंकि अपरं उक्कट्ठं च। अवरं का अर्थ जघन्य है और वहाँ पर कल भी ये ही कहा था कि उसकी यात्रा इस प्रकार है। क्षायिक सम्यग्दर्शन यहाँ पर सामान्य रूप से है। वहाँ पर जो कल कहा था तिर्यंचों में चूँकि जघन्य होता है, पात्र का चयन और कर लिया उन्होंने। क्षायिक सम्यग्दर्शन जो होता है तिर्यंचों में साक्षात् उत्पन्न नहीं होता। मनुष्य अवस्था में आयुबन्ध पहले कर लिया फिर बाद में चला गया क्षायिक सम्यग्दर्शन के साथ वहाँ पर जघन्य जो सिद्ध किया उन्होंने, चतुर्थ गुणस्थान में तो सिद्ध किया लेकिन गति मार्गणा के अनुसार तिर्यंचों में जघन्य क्षायिक सम्यग्दर्शन लब्धि होगी यह निर्धारित किया। देखो अंतर आ गया न यहाँ अब। यहाँ पर लब्धिसार में ये नहीं बताया जघन्य होता है और वह क्रम से बढ़ता–बढ़ता–बढ़ता–बढ़ता क्षायिक हो जाता है। उत्कृष्ट वहाँ पर होता है। ये उनका उपक्रम है, अब सुनलो इसके उपरांत चौदहवे गुणस्थान में भी होता है, अधात्मकार कहते हैं यहाँ पर पूर्ण मुक्ति नहीं हुई। एक मुक्ति तो हो गई, जीवन मुक्ति इसको बोलते हैं। कथंचित् हो गए लेकिन आधा है आधा और शेष है, अघातिया कर्मों का अभी नष्ट होना। वो क्या करता है उसके लिये कहा जाता है सयोग अवस्था में जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र है जो आस्रव से सहित है बन्ध सहित है योग सहित है इसलिये वह चौदहवे गुणस्थान में पहुँच जाएगा तो निश्चित रूप से इससे और पुष्ट हो जाएगा और पुष्ट होगा। इसका परिणाम ये है वहाँ पर चौथा ध्यान होगा। यहाँ पर चौथा ध्यान तीन काल में होगा ही नहीं। यहाँ पर तीसरा ध्यान जो हुआ वह चूँकि सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति जिसको बोलते हैं वह योग अवस्था में हुआ। आस्रव उसको उसने रोका नहीं लेकिन एकांत से रोका नहीं ऐंसा नहीं जो सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति होता है उस समय आस्रव हो रहा है और जो योग सहित पहले था अन्य योगों के साथ जो रहता था उस समय का जो साता का आस्रव इसमें बहुत अंतर है चूँकि यह सूक्ष्म होने के कारण इसमें कथन नहीं किया जा सकता अन्यथा सूक्ष्म क्रिया क्यों कहें ? सूक्ष्म क्रिया हो गई तो सूक्ष्म ही ऐंऽऽऽ साता का आस्रव होगा * वो मनोयोग करके वह केवल सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति उसको बोलते हैं, जिस समय न मनोयोग रहता है न वचन योगहै। वो कहता है दो के लिए हम कह रहे है , ये पांच के ऊपर कह रहे हैं। पांच हजार भी हो सकता है लाख भी हो सकता है करोड़ भी हो सकता है अब क्या–क्या ? क्या पता जब तक वो बढ़ेगा तब तक वो बढ़ाता चला जाएगा ? अब ये किसी को कहिये नहीं। नहीं समझे, भैया हो फोन करके मैं आपके लिये कह रहा हूँ। हूँ। हम उनको बाद में समझा देंगे। देख लो। बात समझ में आ रही है आपको ? सौदा कैसा होता है ? ऐसा होता है। जिसको दुर्लभता समझ में नहीं आती वही व्यक्ति इसको ऐसा है अथवा हठग्राहिता जिसको बोलते हैं उसके कारण ऐसा होता है। जो लिखा हुआ हो, ऐसा नहीं आधार पर लिखा हुआ हो, तो वह कभी भी दो बात नहीं होती वहाँ पर। एक बात रहती है। ये अल्प बहुत्व अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। जघन्य से लेकर के उत्कृष्ट तक और स्वप्न में भी ये ही आएगा आज। हॉ * त्रिलोकसार का * हॉ। चालीस साल पूर्व में गुरू महाराज थे उस समय चर्चा हो रही थी। हमारे उस समय चर्चा में कोई भाग लेने की बात ही नहीं होती थी, सुनता था एक तरफ बैठ करके। ** हॉ उधर चर्चा चलती थी बस सुनते थे हम। भाग नहीं लेते थे लेकिन सुनते थे। सुनने का भी एक

क्रम है ही अपने ढंग से। उसी का प्रभाव है। * नहीं वो गुरू महाराज का आर्शीवाद ही इस ढंग से रहता है कि वो सब पच जाता है। वो बिल्कुल है बिल्कुल। * काल का प्रभाव है, नहीं उनका आर्शीवाद है '' विद्या कालेन पच्यते'' * हाँ '' वीतराग स्वसंवेदन ज्ञानात् सकाशात् कर्म न प्रभवति'' वीतराग स्वसंवेदन इसलिये वीतराग चारित्र वीतराग सम्यग्दर्शन और वीतराग स्वसंवेदन ज्ञान। ये तीनों रत्नत्रय के प्रतीक हैं जो निश्चय रत्नत्रय माना जाता है और यह ग्यारहवे गुणस्थान से प्रारंभ होगा पहले नहीं, पहले सराग है। जब तक सराग दशा है तब तक बंध करता है इसलिये वह ज्ञानी नहीं है। ऐसा पहले कहा है। * वीतराग बता रहा है न, ये बता रहा है। '' छद्मस्थ वीतरागयोश्चतुर्दश''। * इससे कोई मतलब नहीं । वीतराग स्वसंवेदन ज्ञान जो कहा दसवे गुणस्थान के ऊपर पक्का हो गया। आगम भाषा में लिखा है। इसलिये या तो इसको यथाख्यात चारित्र कहा है, इन्हीं आचार्यों ने कहा और जब तक जो है बंध होता है समझ लेना अज्ञान है। अज्ञान क्यों होता है ? तो कषाय है। * नहीं वो मानने के लिये हैं हम। क्षायिक सम्यग्दर्शन को चतुर्थ गुणस्थान में मान रहे हैं * हाँ। मतलब * लेकिन निश्चय जो आता है प्रकृति छूटना चाहिये और कषाय का बंध छूटना चाहिये। बस, मोह का भी बंध नवमें गुणस्थान में छू गया लेकिन फिर भी 'सकषायत्वात्' कहा। बंध चल रहा है। इसलिये वो ज्ञानी स्वसंवेदन ज्ञानी नहीं है क्योंकि वीतरागी नहीं है। ये विशेषण अपने आप में महत्वपूर्ण है। अब क्षायिक सम्यग्दर्शन–वीतराग सम्यग्दर्शन हो गया। ऐसा कहते हैं तो वह वहाँ के लिये कहा गया है, क्षायिक सम्यग्दर्शन तेरहवें गुणस्थानवर्ती है, '' चतुर्थ गुणस्थानवर्ती को समवाय संबंध एक '' ऐसा नहीं कहा है। जहाँ कहीं भी क्षायिक सम्यग्दर्शन को केवल ज्ञान के अविभागी प्रतिच्छेद क्षायिक सम्यग्ज्ञान और व्यवहार सम्यग्चरित्र निश्चय सम्यग्चरित्र और क्षायिक सम्यग्चरित्र ये तीन हैं। ये तीन है वहॉ पर , कई बार कह चुका हूँ। और इसी प्रकार अन्यत्र केवल सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन सिद्वत्वेभ्यः ऽऽऽ केवल है। इसका अर्थ ये है पहले केवल नही था सपोर्टेड थे संसार दशा में। इसको बोलते हैं आध्यात्मिक ग्रंथ में कारण समयसार। सिद्धों में कार्य समयसार है और यहाँ पर कारण समयसार है। सिद्धों में ज्ञान चेतना है और यहाँ पर सम्यग्ज्ञान है '' तत्प्रमाणे'' बस! ये सब कहते जा रहे हैं। ये आप लोगों की इधर उधर की जो लेखमाला है पढ़कर के हाँ ये इतना हो गया। ऐंसे क्या हो गया। ये तीनों को साथ चलाओ। कई बार ये कहा है हमारे यहाँ मोक्षमार्ग कैंसा है ? ऐंसा नहीं एक दो और तीन। ऐंसा नहीं फिर कैसा
है * ↓↓↓ ऐंसा है। कैंसा है ऐंसा ↓↓↓। एक पहले कर लो। पहली सीढ़ी प्रथम सीढ़ी * मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी या * बिन ज्ञान चरित्रा बस ये पढ़ लिया। ये पहले कर लो बेटा इसके ऊपर पैर पहले रख लो, हाँ। फिर इसके उपरांत इसके ऊपर पैर रख लो हाँ, फिर इसके उपरांत ये है। इसका अर्थ ये है सुन लो हम बता देते हैं। सम्यग्दर्शन जब रहता है उस समय सम्यक् ज्ञान नहीं रहता क्योंकि दूसरी सीढ़ी में है वो ✡*✡ नहीं समझे। बीच में नहीं रखना बेटा गिर जाओगे। समझते हैं न, हओ ✡ठीक है प्रथम सीढ़ी सम्यग्दर्शन ही, द्वितीय सीढ़ी सम्यग्ज्ञान की, तृतीय सीढ़ी सम्यक् चरित्र की। अपने आप हो जाएगा बेटा हओ। हओ बिल्कुल * सहज बिल्कुल ये दो चढ़ जाओगे तो बिल्कुल चढ़ जाओगे तुम। नहीं समझे। अभी ज्ञान की भी बात मत करो। ये भी ठीक है पहले मानते जाओ ये अब है न ज्ञान प्राप्त है। चारित्र तक पहुँचना तो है ही नहीं * ऐंसा है आचार्यों ने कहा है – शब्दार्थ नयार्थ मतार्थ आगमार्थ भावार्थ ये है। भावार्थ क्या लिखा है देखो जी, भावार्थ क्या लिखा है। अरे पहले शब्दार्थ पढ़ो फिर नयार्थ पढ़ो फिर भावार्थ लगाओ। अंत में तो भाव लगाने ही है वही लगा लो पहले। गलत बात है पहले से ही आप लौंग मिर्च खा लो! ये ठीक नहीं। * समझे, हेंऽऽऽ * अब सौंफ खाना ही है तो पहले रोटी। वो सौंफ तो खा लो। दे दो। अब खाना ही तो है सब गटपट मिलना तो है ही पहले से मिलाकर के दे दो ✡हाँ * विधि क्या है ? ये कौन सी विधि है ? * हेंऽऽऽ * अरे! मेहमान तो ये हैं वो अपना व्यक्ति है बाद में खाना कि पहले खालो * हाँ सब मिलना ही है वो तो। गटपट तो होना ही है * हेंऽऽऽ * इसका अर्थ ये हो गया। विधिवत् होना चाहिये। विधिवत् होना चाहिये शब्द पहले होना चाहिये नयों की विवक्षा लगाना

चाहिये, मत को देख लेना चाहिये कि सामने वाला कौन सा मतवाला है। उसके लिये संबोधित किया जा रहा है, आगम कौन सा है ? यह भी देख लो प्रथमानुयोग है करणानुयोग है द्रव्यानुयोग है कि कौन सा है अध्यात्म है या आगम है। ये सब देख लो अथवा ये कौन से आचार्य के द्वारा लिखा गया ये देख लो। उन्होंने कौन से कौन से आचार्यों को छुआके बराबर कहा है। वह क्षायिक सम्यग्दर्शन वही जो तेरहवे गुणस्थान में विद्यमान है इसका नाम भी क्षायिक ही रहेगा * हाँ।अब वह अज्ञान भी कई प्रकार का होगा तो ज्ञान भी कई प्रकार का होगा। नहीं समझे ? हाँ। अभी हम कल जो एक उद्धरण दिया था उसी को एक दूसरे उद्धरण के माध्यम से हम स्पष्ट करना चाहते हैं। वो अभी वही महाराज हैं लेकिन ये त्रिलोकसार में उन्होंने कहा था वहाँ पर उन्होंने क्या दिया था। अविभागी प्रतिच्छेदों का। उसी प्रकार उनकी एक कृति लब्धिसार है। सुनते तो हो आप लोग लब्धिसार। लब्धिसार में ही उन्होंने लिखा। अब वह हमारी काल लब्धि कहो * कि उस ओर जाती ही नहीं हमारी दृष्टि। इतने सारे–सारे बड़े–बड़े संपादन हुए हैं और प्रतिदिन अध्ययन अध्यापन होता रहता है। कितनी बार लब्धिसार का अवलोकन हुआ ? पता नहीं और उन्होंने एक गाथा लिखी है। टीका तो होती है बाद में। ये बात अलग है टीका तो उनही नहीं है लेकिन गाथा में स्पष्ट हो गया है। उन्होंने कहा कि ''सत्तण्हं पयडीणं क्षयादो अवरं क्षायिक सम्मत्त लब्धि''। थोड़े से एकाध शब्द जो हैं छूट भी सकते हैं लेकिन भाव में पूरे दे रहा हूँ। ये सात प्रकृतियों के,सात प्रकृतियों के अर्थात् दर्शन मोहनीय। दंसण तिय क्षयादो – दर्शन त्रिक के क्षय होने से अवरं माने जघन्य क्षायिक लब्धि होती है। अवरं कहा परं नहीं कहा, क्या कहा ? अवरं का अर्थ अपरं इति। परं इति उत्कृष्टं, अपरं अर्थात् इति न उत्कृष्टं। नहीं समझे। अफरा तफरी में आप भूल जाओगे, ये लिख लो * हम क्या कह रहे हैं, अपरं की बात की जा रही है। न परं इति अपरं, न अनुत्कृष्टं यह जघन्य है। जघन्य कब होता है क्षायिक सम्यग्दर्शन की लब्धि प्राप्त हो गई। किन्तु वह सात प्रकृतियों के क्षय से प्राप्त हुई है। सात प्रकृतियाँ कौन–सीं हैं ? चार अनंतानुबंधी, दर्शन मोहनीय त्रिक। इनके क्षय से क्षायिक सम्यग्दर्शन कैसा हो गया ? जघन्य हुआ है। अब आपको सोचना है, ऐसी कौन सी दर्शन मोहनीय और रह गई है जो अभी वह उत्कृष्टपने को नहीं ले जा रही है। जो हो गया बता रहे हैं, जो कुछ हो गया वो मिटेगा नहीं इसका नाम क्षायिक है लेकिन अभी लाला, हाँ दादा नहीं। नहीं समझे दद्दा और बब्बा तो बनेंगे और नाती पोता होंगे। नहीं समझे, हाँ ये नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती लब्धिसार में बता रहे हैं गाथा में। टीका ईका देखो मत अब हाँ ये टीका टिप्पणी जो है न, बाद में देख लेते हैं। अब इसमें हो गया। तो 'सत्तण्हं पयडीणं क्षयादो अवरं यानि अपर – जघन्य क्षायिक सम्मत्त * रवय लब्धि। क्षायिक लब्धि, क्षायिक लब्धि उत्पन्न हो गई, सात प्रकृतियों के क्षय से उत्पन्न हो रही है। अपरं क्यों लिखा ? न परं इति अपरं, यह जघन्य क्षायिक लब्धि हो गई याने दर्शन तो हो गया सम्यग्दर्शन तो हो गया लेकिन जघन्य है उत्कृष्ट नहीं। फिर उत्कृष्ट किसको होगा ? दूसरे कर्म कौन से हैं अब, दर्शन मोहनीय के अलावा ? हाँऽऽऽ। अब सोचो अब सोचो, एक की उपलब्धि हो रही है। अपने यहाँ सन्निकर्ष की व्यवस्था को थोड़े से अध्ययन करो तो बहुत सारे मामले निपट जाएँगे। समय संयमी के पास जो सम्यग्यदर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यग्चरित्र है वह अलग क्वालिटी के हैं इसलिए वह पूर्व में जो क्षायिक सम्यग्दर्शन था वह यहॉ पर पुष्ट हो गया ये लिखा है विद्यानंद जी महराज ने और दो तीन स्थानों पर लिखा है इसलिए ये सिद्धांत मत अपनाओं कि जो क्षायिक सम्यग्दर्शन हो गया उसमें अब वृद्धि और हानि नही होगी ये नियम तो आपने बना लिया है वो प्रश्नकार ने प्रश्न ऐसा बना कर के चला दिया और उसी को हिन्दी कार ने ले लिया और सब लोग पढ़ रहे हैं। उसी को । विद्यानंद जी महाराज को नही समझे विद्यानंद जी महाराज के ये मान्यता नही है आपके कहने से हम हओ कह दें , संस्कृत पढ़ो अच्छे ढंग से । यू मत देखो ▣ ऊपर देखो पहले कुन्द कुन्द को देखों उमास्वामी महाराज जी क्या कह रहे हैं क्या कह रहे है वो ? बिल्कुल , बिल्कुल आगे आगे बिल्कुल कहते चले जा रहे है जबकि तीनों का विकास हो रहा है ऐसा नही होता मोंक्षमार्ग हमारा एक विकसित हो गया अब दो का विकास हो रहा है ऐंसा नही होता तीनों का विकास हो रहा है। * हॉ इसलिए निर्जरा तो तीनों से ही बनेगी ।

हॉ यदि वह पुष्टि नही हुई अकेले क्षायिक सम्यग्दर्शन के साथ जो निर्जरा रही थी अब संयमासंयम ले लिया निर्जरा बढ़ गई , क्यो ? वह भी हमेशा । वही भी बड़ा हो गया बिल्कुल । एक पेड़ में , पेड़ में जितने अंग उपांग फल फूल पत्ते आदि है उन सब में अनुपात से रस जा रहा है बस । सबका पोषण हो रहा है। जड़ कह दे , एडडड सब कुछ मैं ही हूॅ सब कुछ यही रखों जड़ मजबूत क दो हओ। ऐसा ऐसा नही ज्यादा मजबूत मत बनाओं , वहॉ तक पहुचा दो तुम इतईं तो हो यही के यही लेते जाओं और पहुॅचाते जाओं । हूॅ । यदि ऊपर ठीक नही रहेगा , तुम धडाम से गिर जाओगें । इसलिए उसकों चाहिए , छाया भी चाहिए । जड़ तक छाया चली जाती हैं । ऊपर के कारण * हूॅ * नीचे को जो तना है वो हमेशा – हमेशा छाया में रहता हैं। हॉ । वो वृक्ष में जो रस चला गया वो कहता है तुम अच्छे ढ़ग से शांति से रहो । एयर कंडीशन में रहो AC * रहो अच्छे ढ़ग से । न लू लगेगी न वर्षा । कुछ भी नही । वर्षा से बच जाता है वो इसलिए तो पुष्ट रहता हैं। हॉ । ये सारे – सारे पोषण तत्व उसको मिल रहे हैं पुष्ट होता चला जा रहा है। इसीलिए अंग का जैसे विकास होता चला जाता है अंग उपांग और प्रत्यक्ष वह सारे – सारे उसी प्रकार सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यग्चारित्र पुष्टि को प्राप्त होते हुए आगे बढते चले जा रहे है यही जघन्य से उत्कृष्ट तक जाने की यात्रा है , प्रवास है * हओ * हैऽऽऽ * धीरे – धीरे – धीरे गुरू महाराज जी ने कहा था विद्या कालेन पच्यते । * * पचता जा रहा है वो , लेकिन मैं बीच – बीच में कहता हुआ आया हूॅ इसका अर्थ ये है क्योकि प्रतिसमय कार्य हो रहा हैं। अंसख्यात गुणी निर्जरा हो रही है तो पोषक तत्त्व बढ़ता जा रहा है पंचास्तिकाय को पढ़ाया उस समय उन्होने स्पष्ट लिखा है व्यवहार सम्यग्दर्शन , निश्चय सम्यग्दर्शन , क्षायिक सम्यग्दर्शन । व्यवहार सम्यग्ज्ञान निश्चय सम्यग्ज्ञान औरबस, सम्यग्दर्शन को मिटाने वाला तो मिथ्यादर्शन है, ऐसा नहीं। अभी तो थोड़े से फूल के रूप में आया है। अभी इसका फल अथवा फूल। फल भी जो है जैसे ऐंऽऽऽ होली के दिनों में खट्खट खट्टा–खट्टा क्या, थोड़ा बहुत चरपरा भी रहता है उसमें छोटा सा लग जाता है, होली के दिनों में आ जाता है। मोर झड़ने के उपरांत जो आ जाता है गोली के बराबर। नहीं समझे, बच्चे उन्हीं को खाकर के हम आम खाते हैं ऐंसे कहते हैं। ऐसा नहीं वह ऐसा है। अब धीरे–धीरे– धीरे–धीरे वह आगे बढ़ेगा चैत्र आएगा। वैसाख की गर्मी फिर बाद में वह हरे से पीला होगा उसमें गुठली आएगी वो आएगा बाद में अब उसका कुछ नहीं रहा। इसी प्रकार क्षायिक सम्यग्दर्शन–सात प्रकृतियों के क्षय से उत्पन्न हुआ वह जघन्य क्षायिक सम्यग्दर्शन है यह नोट कर लो हॉ। बार–बार समझते हैं सिद्धों का और हमारा एक है । हओ, एक ही है । क्या एक है? नादान लडका है, नागरिक तो बाद में बनेगा। नहीं हमारा तो है ? आपका ही है लेकिन अभी नादान तो स्वीकारो। नहीं–नहीं वह पेट में ही सीखकर के आया है। हओ। क्या सीखकर के आया है पेट में ✡ पेट में सीखकर के आया है मतलब खाना पीना जो कुछ भी है वहीं से सीखकर के आया है ✡ नहीं समझे, जो कुछ भी पेट में था वही खा पीकर के आया है और क्या सीखकर के आया है मुझे बताओ? हॉ। अब वह 'उक्कट्ठं पुनः' अब देखो नीचे के गाथा के उत्तरार्द्ध में हम आ रहे हैं। जघन्य हो गया न, अपरं– यह अपरं क्षायिक लब्धि हो गई। उत्कृष्ट किसको बोलते हैं परं। परं किन्तु, घाई चउक्कस्स खयेण हवे उक्कट्ठं क्षायिक लब्धि। उत्कृष्ट जो क्षायिक लब्धि है वह धातिचतुष्क के क्षय से उत्पन्न हो जाती है। इससे खुलकर के बढ़िया विस्तृत रूप से कहीं भी वर्णन नहीं मिलेगा। अब कहॉ से कहॉ तक यात्रा होगी? कम से कम तेरहवे गुणस्थान तक। चतुर्थ गुणस्थान से ले लें अब इसकी क्षायिक की यात्रा करवा दो। इसलिये आचार्यों ने कहा 'यह व्यवहार सम्यग्दर्शन है यह व्यवहार सम्यग्दर्शन है, निश्चय सम्यग्दर्शन का हेतु है इसलिये इसको निश्चय कहीं कहा हो तो कोई बाधा नहीं लेकिन फिर भी आज का लड़का है आज का नागरिक है जैसे कल का राष्ट्रपति है। हओ ठीक है। नहीं समझे। अभी तो वह राष्ट्रपति है। हओ ठीक है। नहीं समझे अभी तो वह राष्ट्रपति बनने के योग्य नहीं है किंतु अभी उसको voting करवाओ। उसके हाथ से पहले voting करवा दो उम्मीदवार जो खड़े हैं उनकी पहचान हो जाए फिर बाद में। ध्यान रखो M.L.A. खड़ा होता है उसके लिये उम्र पच्चीस (25) है * हूँ * 21 में हो जाता है * और ये

18 वर्ष हा, 18 वर्ष का तो voting के लिये आ गया * 25 हाँ * वो ही तो हम कह रहे हैं सुनो तो, सुनो तो * वोटिंग के लिये 18। 25 जो जिसको खड़े है। उनके लिये, तो जो खड़े है ये M.L.A के लिये हैं ध्यान रखना। इसी प्रकार सांसद के लिये भी है कुछ ज्यादा रखो। राष्ट्रपति के लिये उम्र क्या निर्धारित रखी है * बताओ ? * 35। सोचो सुनो 35 का मतलब 18 वर्ष का तो vote(वोट) दे सकता बढ़त नही हुआ किंतु वह आगे जैसें जाएगा तो निश्चित रूप से वृद्धि होती चली जाएगी , हानि नहीं होगी । हॉ इसी का , इसी का नाम तो जघन्य है । सात प्रकृतियों के क्षय से जो उत्पन्न हो गई लब्धि स्थान अथवा यू अविभागी प्रतिच्छेद उनका विकास तो होगा और पुष्टि भी आएगी लेकिन हानि हानि नही होगी , लेकिन हानि का अर्थ हम Quality की अपेक्षा से हानि भी मान लेगें संख्या तो बढ़ती। लेकिन पूर्व में जो संख्या थी वह संख्या तो और बढ़ गई लेकिन हानि तो नही हुई लेकिन उस संख्या में जो क्वालिटी थी वह क्वालिटी बढ़ गई इसी का नाम हानि हैं। यदि , यदि मान लो उसकी पुष्टि नही मानते हो तो उतनी – उतनी क्वालिटी रहेगी आपकी * कूटस्थ – कूटस्थ । वो रहेगा ही नही । रह ही नही सकता * हॉ हॉ * हॉ हॉ , हो जाए * इसलिए तो विपरीत क्रिया मानते हैं। * हॉ हॉ हो जाए * हॉ हॉ उसमें कोई बाधा नही क्योकि उसका कारण अलग हैं। * चरित्र मोहनीय का उदय आ गया तो वो हुआ । उसमें क्या बाधा है ? विकास हुआ तो हानि होगी । क्योकि दब गया था दबने में जो विकास हुआ था लेकिन नीचे आएगा वो यथाख्यात चरित्र रहा नही सूक्ष्म सांपराय इत्यादि में आ गया । यदि मान लो उससे भी नीचे आ गया वो तो मिथ्यादर्शन हो गया और चला गया वो निगोद में भी बस *क्षायिक समयग्दृष्टि की बात नही कह रहे हैं। हम इस ढ़ग से । मान लीजिए अब क्षायिक समग्यदृष्टि आ सकता है। तो चतुर्थ तक आ सकता हैं। क्या हानि नही हैं , क्या ये ? वो जघन्य में आ गया । वो चूँकि चरित्र का जो विकास हुआ था वह जैंसे – जैसे दबता गया वैसें – वैसे इसका विकास हो गया । इसको यदि नही मानेगे अन्यथा गुणस्थान विकास क्या है ? चतुर्थ गुण स्थान में हो गया क्षायिक सम्यग्दर्शन अब तेरहवे – चौदहवे गुणस्थान तक बैठे रहो । दो का ही विकास होगा ऐसा नही पुष्टि तो सब में होगी । एक हाथ जो पूरा – पूरा हो गया फिर दूसरा जो है बिल्कुल पतला रहेगा फिर उसकी पुष्टि में लग जाओ एक पैर में ऐसे लग जाओ पोलियो टाइप *ये क्या है ये ? ऐसा थोडा नही होता समग्र विकास होता है एडी से लेकर के चोटी तक * हूँ । अनुपात इसी को बोलते हैं । इसको नही समझे वहॉ पर जो प्रश्न ही नही किया हैं। अभी संभव सागर जी लेकर के आए थे वह , वह प्रश्न ही नही समझ पाए और प्रश्न को ही उत्तर समझ कर के चालू कर दिया । वो उन्होने वो पूर्व पक्ष बनाने वालो ने ही यह कहा है , जो निरपेक्ष सात प्रकृतियों का क्षय होने के उपरांत जो उत्पन्न होगा । पर की अपेक्षा से वृद्धि को प्राप्त नही होगा और हानि को भी प्राप्त होने का सवाल नही उठता ऐसा होना चाहिए ऐसा पूर्व पक्ष उन्होने किया , ऐसा है ही नही वहॉ पर। हॉ क्षायिक लब्धि जब होती हैं। तो उसमें वृद्धि और हानि होती है ऐसा शंकाकार ने रख दिया , उसको लेकर के चल रहा है आज । उसमें थोडे से भी नीचे भी पढ़ लेते हैं उनका यह कहना है जो असंयम सम्यग्दृष्टि था यानि असंयत सम्यग्दृष्टि था अपने क्षायिक सम्यग्दर्शन था वह जब संयमी बना । उसहै। 18 दूनी 36 मतलब दुगना चाहिये। बेटा सुन लो राष्ट्रपति की बात मत करो अभी ✡ तुम बेटे हो थोड़ा सुन लो पहले ✡नहीं समझे। 18 वर्ष आपको प्रतिदिन, प्रतिदिन का मतलब प्रत्येक जो चुनाव में voting करता है। हाँ और 6–7 साल का running हो जाए फिर तुम तो सांसद बनने के योग्य हो जाते हो अथवा M.L.A. बनने के योग्य हो। अभी तो 7 साल का voting करो हाँ समझे फिर राष्ट्रपति बनना है हओ। बनो। राष्ट्र क्या है पहले समझो फिर बाद में राष्ट्रपति बन जाओ। राष्ट्र क्या है पता ही नहीं और चल रहा है ऐसा नहीं। दुगुना जो है जब चलेगा तब कहीं जाकर के राष्ट्रपति बनता है ऐसे ही क्षायिक सम्यग्दृष्टि की यहाँ पर परिस्थिति है अब उपचार से नहीं समझे। 13वे गुणस्थान में और 14वें गुणस्थान में उसका विकास हो रहा है क्योंकि पूर्व जिस गुणस्थान के प्रथम समय में कर्म की निर्जरा हो गई दूसरे समय में असंख्यात गुणी निर्जरा हो गई। इसका अर्थ ये है कि एक समय में इतना powerful हो गया वह

सम्यग्दर्शन। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चरित्र ये हमारा रत्नत्रय चलेगा last तक। ये विकासशील progressive ये तीन इसके माध्यम से कार्य होता चला जा रहा है। एक समय! एक समय में सम्यग्दर्शन भी आगे बढ़ता जा रहा है, परिवर्तित होता चला जा रहा है धारा के रूप में है, जो पूर्व में था वह बाद में नहीं। जो बाद में हो गया वो और बाद में नहीं। इस प्रकार इसको चलाओ इसको बोलते हैं जघन्य से उत्कृष्ट तक की यात्रा। यह लब्धिसार में बिल्कुल स्पष्ट लिखा है और उस में जो असंख्यात गुणी निर्जरा प्रतिसमय होती जा रही है उसमें उसके अनंत लब्धि स्थान उत्पन्न होते जा रहे हैं और वो लब्धि स्थान पूर्व समय मे नहीं थे अगले समय में आ गए, बढ़ गए एक–एक समय में। उसकी यात्रा आगे बढ़ रही है पूर्व की अपेक्षा ऐ पुष्टि होती चली जा रही है। नहीं तो कर्म की निर्जरा की जो व्यवस्था है, संवरों की जो व्यवस्था है, ये तीन काल में बन नहीं पाएगी। * क्यों ऐसा समझ रखे हो * सुनो तो वो ही हम कह रहे हैं, वो ही तो हम कह रहे हैं जब क्षायिक सम्यग्दर्शन अब उसका प्रतिपक्षी तो कुछ रहा ही नहीं * इसलिये पहले कह रहे हैं इन्होंने पक्ष में रखा है। पक्ष और विपक्ष में जो कुछ है वही है, मोहणीयस्स मोहजुत्तस्स उवओगस्स तिण्हि परिणामा के ते मिच्छत्तं अण्णाणं अविरदि भावो य एव। ये गाथा पहले कह कर के आए हैं। हाँ–हाँ वो उसके रूप को समझने के लिये हम कहेंगे लेकिन वो उपयोग की ही परिणति है। यह पहले ध्यान में रखकर के चलना है। * दो है दो है। कारण और कार्य की व्यवस्था यही तो तारतम्य को बता रहा है। इसलिये व्यवहार में जो सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चरित्र कहा वह निश्चय का कारण है। निश्चय में चूँकि ध्यान होता है इसलिये तीन नहीं बताएँगे। ये तीनों अभिन्न क्यों कहा अभिन्न का अर्थ ये है ध्यान में तीनों का एकीकरण हो गया और कार्य इस प्रकार का हो रहा है इसलिये सभी का विकास चल रहा है। सभी को एक गोला हो गया है। कार्य तो हो रहा है तीनों के माध्यम से। फिर इसके उपरांत क्षायिक सम्यग्दर्शन क्या है ? * तो पँचास्तिकाय पढ़ो * अरे! आप न पढ़ते हैं नही अर्थ लगा सकते हैं। ये टीका यह प्रश्न होने से टीका किसकी है ? तो यहाँ पर टीका के बिना हम भूल को बता रहे हैं अब यहाँ अध्यात्म ग्रंथों मे यह सारी –सारी बातें नहीं बताएँगे। ये कई बार स्थानों में लिखा, ये अध्यात्म ग्रंथ होने के कारण भावना का प्रवाह होने के कारण पुनरावृत्ति का दोष लगते हुए भी दोष नहीं लगेगा ये कहा है, हाँ। उपभोग के पदार्थ कुछ अलग होते हैं और भोग के पदार्थ कुछ अलग होते हैं। एक बार भोगा जाता है भोग, और उपभोग उसी वस्तु को बार–बार भोगा जाता है। आज तक का कोई नहीं निकला संभव है स्वर्ग में जो वस्त्र पहनता है वह दुबार वस्त्र नहीं पहनता होगा। (कैपेसिटी) हो तो, क्योंकि उसी को धोओ और उसी को पहनो। कोई आभरण एक बार लाकर के रख दिया और वह अंतिम समय तक चल रहा है। नाक के काँटा और बचपन से वो ही चल रहा है ✡* उसमें * हाँ * अरे थोड़े बहुत लगा देते हैं और बढ़ा देते हैं, जैसे–जैसे नाक मोटी होती चली जाएगी वैसे–वैसे काँटा भी ✡** घड़ी का काँटा है बिल्कुल डायल नहीं बड़ी होती डायल तो बड़ी हो जाती है। उसी आकार के अनुसार वह चलता रहता है * है तो ये इतना बड़ा खाना है उसमें 5 ही second लगते हैं ✡* हाँ। कहीं–कहीं एक बार घड़ी देखी थी हमने * तो वह सेकण्ड का काँटा जो है न ⊡ यूँ–यूँ सरक रहा था और एक घड़ी देखी थी ⊡ * ये है न वो ही तो हम कह रहे हैं यह एकार से स्टाइल है ✡है ही वो। सरकना तो वो ही हो रहा है। देखो इसमें, इसमें हम घटाते हैं तो इसको हम ये घटाते हैं कि एकांन्तानुवृद्धि नहीं समझे ✡हाँ एकान्तानुवृद्धि और एक जो है गैप लेकर लेकर के वृद्धि, दोनों खिसकते उतना ही हैं उतने में ही है उतने समय में ही हैं लेकिन एक – एक समय में ही बढ़ता जा रहा हैं। रूकता नही वो और एक क्या करता है ⊡ * हॉ वह रूकता हुआ जैसा लगता है ये अपने – अपने ढ़ग से लगातार जो जैसे मान लो छह घड़िया है के जो सीढी चढेगे लगातार , बीच में कोई रूकना हो तो रूक लो बात अलग है बढते जाते है। जाओ । बड़े बाबा के पास चले जाते हैं चार पांच (सीढ़ी) चलो ⊡ * ये वो एकान्तानुवृद्वि है । समझ में आ गया क्यों दुर्लभ ! नही अब समझ में आ गया * अच्छा उदाहरण तो अपने बहुत पक्के हैं । ये ध्यान रखना समझ मे आ जाना चाहिए । बस इतना ही बिषय है तो अब दोनों में , त्रिलोकसार में भी उन्होने कहा और यहॉ पर

पर लब्धिसार में भी कहा । और कई लोग कह रहे हैं। कि विद्यानंद जी महाराज जी ने श्लोक वार्तिक में ,इसमें अलग रखा वो ऐसा नही लिखा क्यों एक बार क्षायिक लब्धि हो जाती हैं। तो उसमें वृद्वि और हानि नही होती हैं। कहॉ है Last होने के उपरांत हानि और वृद्धि नही होगी लेकिन जघन्य और उत्कृष्ट इनमें तो होती ही रहती हैं । अथवा यू कह दो जिनमें , जिनमें सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ और दर्शन मोहनीय का क्षय हुआ वो जो लब्धि स्थान हैं। जो संख्या । अब उनमें घटन5 उत्तर पुराण आचार्य गुणभद्रकृतय चतुःञपचा ात्तमं पर्व

अवगाढ़ सम्यकद ान, परामवगाढ़ सम्यकद ान

भ्युक्लध्यानोद्ध सद्ध्यात्या मोहारातिं निहत्य सः । सावगाढ़गर्योऽभाद्

विच्चतुश्कादिभास्करः

द्वितीय भ्युक्लाध्यानेन धतित्रियतयधतकः । जीवस्यैवापयोगाख्यो गुणः ोशश्वसम्भवात्